

श्री०
१

ॐ नमः सूर्याया पुण्यार्थं त्रयदारविंदं मूरं मे हेंद्र्यपदांबुजं वातनोति तदुफितयत्रा जयथस्यटीकां मलयेंडु
सूरिः ॥ १ ॥ अथ प्रथमतः प्रविकसितपत्रकलग्नात् सारभूतस्य यंत्रा जयथस्य निरंतरां ताराधनिर्वाणयत्रिष्टाचारपरि
पालनाय त्रिष्टापुति त्रिष्टापरंपरा सुप्रवयगमनाय वनक्तं जनमनः संकल्पकल्प दुर्मायमाणश्चा नीष्टदेवतागुरुन
मन्कारपूर्वप्रयोजनमहितयथानिधेयमनिधेयमनिधेयं यंत्रकारः ॥ श्रीपर्वत्रयदांबुजं हृदियरामृत्प्रभावपदां
श्रीमंतं मदनाय सूरिपुगुरुं कल्याणकल्पदुर्मां लोकांनाहितकाम्ययापकुरुते यद्यत्रा जागमं नानाभेदयुतं
चमत्तिकरसूरिमेहेंद्रा निधः ॥ १ ॥ अथार्थमतः अपारेणं पारेकतिवचुर्वचुर्गः परांते उर्वेधिगणितमर
विष्टोदमतिनिः। ततः प्रत्यंसारं विशदमिदमत्यंतं पुगमं वितन्वेदं शास्त्रं दृढदयदृढा नंदतये ॥ २ ॥ नृणां
कुक्ष्याप्रथाबहुविधाय वनिः प्रवाणायं त्रागमानि जनिजयति नाविशोषात् तानुवारिधीनिवविलोया
मया सुधावतसारभूतमखिलं प्रणिगद्यते ॥ ३ ॥ अथार्थे अथ मूत्रक्षदेवयंत्रा मजमहिमा मावष्टे। यथामटः।
शौटरणो कटोपि शस्त्रैर्विमुक्तः परिरभूति मेतिना तन्महाज्योतिषान्मुषोपियंत्रा हीनो गणही कसृष्टे वा ४

श्री०
१

यंत्रगटी

इदमपि पद्यार्थं अथ प्रत्यं त्रां त्रिष्टयं प्रकमजीवाकोष्टकाः सांतरालिख्यं ते ॥ ७ ॥																			
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०
६२	१२५	१८८	२५१	३१३	३७६	४३८	५०१	५६३	६२५	६८६	७४८	८०९	८७०	९३१	९९२	१०५३	१११४	११७५	१२३६
५०	३८	२५	७	४५	१८	४४	१	१०	८	५५	२८	४८	५५	४५	१८	३२	२८	३	९६
६२	६२	६२	६२	६२	६२	६२	६२	६१	६१	६१	६१	६१	६०	६०	६०	५८	५८	५८	५८
४८	४७	४२	३८	३३	२६	१७	८	५८	४७	३४	२४	१४	५०	३३	१४	५६	४५	५३	५२
२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०
१२८	१३४	१४०	१४६	१५२	१५८	१६४	१६९	१७५	१८०	१८५	१९०	१९५	२००	२०५	२१०	२१५	२२०	२२५	२३०
८	३६	३८	१५	२७	८	२२	६	१८	०	८	४३	४२	६	५२	१	३२	२३	३३	२
५८	५८	५७	५७	५६	५६	५५	५५	५४	५४	५३	५२	५२	५१	५१	५०	४९	४८	४८	४७
२८	३	३६	१२	४१	१४	४४	१२	४१	८	३५	५८	२४	४६	८३	३१	१८	१८	२८	४७

श्री.
२

४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५
२३६१	२४०८	२४५५	२५००	२५४५	२५८८	२६३२	२६७५	२७१६	२७५७	२७९७	२८३६	२८७५	२९१२	२९५८
४८	५२	९१	४६	३५	३७	५२	१८	५७	४५	४३	५०	५	२७	५६
५७	४६	४५	४४	४४	४३	४२	४१	४०	३८	३८	३८	३७	३६	३५
३	१८	३५	४८	२	१५	२७	३८	४८	५८	७	१५	२३	२८	३६
५६	५७	५८	५८	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०
२८८४	३०१८	३०५२	३०८५	३११७	३१४८	३१७८	३२०७	३२३५	३२६४	३२९८	३३३१	३३६७	३३९७	३४२८
३२	१३	५८	४८	४१	३८	३७	३७	४०	४२	४६	४८	५२	५३	५४
३४	३३	३२	३१	३०	२८	२८	२८	२७	२६	२५	२४	२३	२२	२०
४१	४५	५०	५३	५७	५८	०	६३	२	४	३	३	१	१	५८

श्री.
२

यंत्रग.

७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५
३४०३	३४२३	३४४२	३४६०	३४७७	३४८३	३५०७	३५२१	३५३३	३५४४	३५५५	३५६४	३५७३	३५८०	३५८८
५२	४८	४२	३३	२०	४	४४	२०	५१	१८	४१	५८	१०	५६	१८
१८	१८	१७	१६	१५	१४	१३	१२	११	१०	८	८	७	५	४
५६	५४	३१	४७	४४	४०	३६	३१	२८	२२	१७	१२	४७	२३	५५
८६	८७	८८	८८	८०	३१	कम	अवध	संशं	१	२	३	४	५	६
३५८१	३५८५	३५८७	३५८८	३६००	ज्याको	८	राशि	यस्यो	०	२	४	८	१३	१८
१४	४	४८	२७	०	पुज्या	उक्रम	ज्याको	३३	१२	५६	४६	४६	४६	४३
३	२	१	०	०	कायां	तराय	एका	जात	१	२	३	४	६	७
५०	४४	३८	३३	०	माष्टा	क७	राशि	रवितो	३८	४४	५०	५६	६	७
७	८	८	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१
२६	२५	४४	५४	६६	७८	८०	८२	८४	८६	८८	९०	९२	९४	९६
५०	२	१८	४२	११	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२
८२	१०	२३	२७	३३	३७	४०	४३	४६	४८	५०	५६	५८	६०	६२

श्री.
३

२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६
२६१	२८६	३११	३३७	३६४	३९२	४२१	४५१	४८०	४९४	५१७	५४०	५९५	६५१	६८७
५८	५९	९४	९८	२०	२३	२३	२२	१८	१२	१२	४७	२८	३	३२
२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८
३	३	४	२	३	०	५८	५६	५३	५०	४५	४१	३५	२८	२३
३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१
७२४	७६३	८०२	८४२	८८३	९२४	९६७	१०१०	१०५४	१०९८	११४४	११९१	१२३८	१२८५	१३३४
५५	९०	९६	९४	३	४१	८	२३	२५	१४	४८	८	११	५८	२७
३८	३९	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४४	४५	४६	४७	४७	४८	४९
१५	६	५८	४९	३८	२७	१५	२	४९	३४	२०	३	४७	२८	१०

श्री.
३

यंत्ररा

अथोक्तमज्योक्तमज्यानयनायश्चाद्वैतवाधः कलिकादिकं वतदतीतमोग्यांतरखंडकघ्नाषष्ट्याहृतं लब्धफलेनियु
क्तैकमोक्तमेव्याहुजकोटिमोवा॥५॥ व्याख्या भुजज्याकोटिज्यानयने भुजकोटिभागानामधःप्राप्त्यादिकलादिकं
भवति। तदा तदतीतमोग्यांतरखंडकेन गुणिते षष्ट्या हृतं लब्धफले द्विष्टकमेव भुजकोटिभोवास्यातां। अ
त्रोदाहरणं। रवेः परमकांतिभागा २३ कल्या ३५ एषा भुजज्यानयनायाम तएव भुजोशाः कल्यांते रात्रित्रयस्य भुज
इति संज्ञा तत्रैकोरात्रिस्त्रिंशदंशः। एतेषा भुजज्यानयनं यथा। कमज्याकोटिकेषु त्रयोविंशत्यंशानामधःप्राप्त्या धं
लंकला १४०६ विकला ३९ तस्यां योतरं ५७५३६ अनेन भुजभागानामधः कला ३५ गुण्यंते। जाता १८५१२६०
अधमनां कल्पषष्ट्या भागे लब्धा। २१ उपरिदिष्टं ते जाता कलाः २०१६ एषा षष्ट्या भागे लब्धा। कलाः ३३३६। पूर्वकला
१४०६। ३९ योज्यतां परमकांतिभागानां भुजज्या कलादिका १४४०। १५ अथ कामणकोटिज्यानयनायथा। रवेः कां
त्यंशः एव भुजभागा २३। एतेन वतेश्च ताः कोद्यंशः। ६६। २५ षट्षष्टिभागानां मधः प्राप्तं फलं। कला ३२००। ४६।

PAGE(S) MISSING

NOT AVAILABLE

4

!

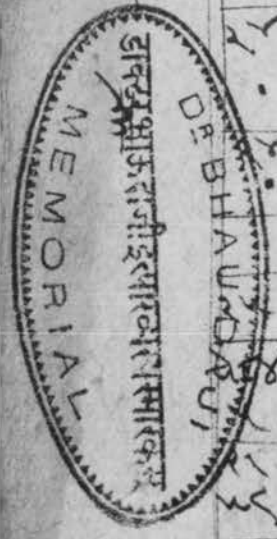
मृगसूत्रम् २

तद्वर्तमानं २५३ अनेन नु जनागानामधः कृता २५४ उपरितना के क्रमेण लि
 थंते जातं कोटि ज्या ३२६ १२ अथो क्रमेण नु जना नयनां नु जनागः २३३ २५५ उक्रम ज्या कोष्ट के पु नु जनागानामधः
 प्राप्त कलादि २०६ ११ तदधो तं २५३ अनेना धसूना कला २५४ २५५ उपरितना के यो
 श्री. ज्या जाता परमकांते रुक्रम ज्या कलाद्या ३०० ४७१ अथो क्रमेण कोटि ज्या नयनां यथा प्रागुक्ता कोटि भागा द्वादश
 १ तत उक्रम ज्या कोष्ट के पु कोटि नागानामधः प्राप्त कलादि २१३ ५४५ तदधो तं २५३ अनेना धसूना कला २५४
 एतेषु ज्या २ नागेलब्धं २४ उपरितन्य ज्या ता परमकांति कोटि नागानामुक्रम ज्या २५५ ४५५ एवं सर्वैरेव मो क्रमा
 न्यां नु जना कोटि ज्या माधने कार्या अथ नु जना कोटि ज्या तस्या माधनां हते कलां के नु जना कोटि मो व्याप्ति र्द्विगुणा
 पलवाः कृतां काः षष्ट्या हतश्चांतर कोष्ट भक्तः कामा क्रमान्यां च धनुः कलादि द्वास्वा पूर्व नु ज्या कोटि ज्या वसाधि
 तातस्या प्रत्यं फल ज्या कोटि ताते तर्द्ध कोष्ट कां का धनु रंश म्कः शेषं षष्टि धन कोष्ट का धि कृतां तरेण विन कंध नु

श्री. ५

यंत्रराटी

रंशानामध सान्ध प्रक्रमो क्रमान्यां कलादिकं भवति उदा पूर्व क्रम नु जना १४४ ० १४५ अस्या मध्यम त्रयोविंशति तम
 कोष्ट का धि कृत क्रम ज्या कोष्ट कां काः १४१ ४०६ ३६ पति ताः शेषं ३३ ३६ षष्ट्या गुण्यते जातं २०१ ६ एते जदध सून कोष्ट
 कांते रां कन ५३ ३६ स ज्यंते लब्धं कला ३५ धनु रंशानामधो द्या धनु रंशानाः संपन्नाः २३ ३५ एवं सर्वैरेव वाप साधनं कार्या
 अथ प्रत्यंशं रात्रि त्रयस्य परमकांति कोष्ट का कलादिका यां तरा लिख्यंते ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥



1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24
21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	31	32	33	34	35	36	37	38	39	40	41	42	43	44
45	46	47	48	49	50	51	52	53	54	55	56	57	58	59	60	61	62	63	64	65	66	67	68
69	70	71	72	73	74	75	76	77	78	79	80	81	82	83	84	85	86	87	88	89	90	91	92
93	94	95	96	97	98	99	100	101	102	103	104	105	106	107	108	109	110	111	112	113	114	115	116
117	118	119	120	121	122	123	124	125	126	127	128	129	130	131	132	133	134	135	136	137	138	139	140
141	142	143	144	145	146	147	148	149	150	151	152	153	154	155	156	157	158	159	160	161	162	163	164
165	166	167	168	169	170	171	172	173	174	175	176	177	178	179	180	181	182	183	184	185	186	187	188
189	190	191	192	193	194	195	196	197	198	199	200	201	202	203	204	205	206	207	208	209	210	211	212
213	214	215	216	217	218	219	220	221	222	223	224	225	226	227	228	229	230	231	232	233	234	235	236
237	238	239	240	241	242	243	244	245	246	247	248	249	250	251	252	253	254	255	256	257	258	259	260
261	262	263	264	265	266	267	268	269	270	271	272	273	274	275	276	277	278	279	280	281	282	283	284
285	286	287	288	289	290	291	292	293	294	295	296	297	298	299	300	301	302	303	304	305	306	307	308
309	310	311	312	313	314	315	316	317	318	319	320	321	322	323	324	325	326	327	328	329	330	331	332
333	334	335	336	337	338	339	340	341	342	343	344	345	346	347	348	349	350	351	352	353	354	355	356
357	358	359	360	361	362	363	364	365	366	367	368	369	370	371	372	373	374	375	376	377	378	379	380
381	382	383	384	385	386	387	388	389	390	391	392	393	394	395	396	397	398	399	400	401	402	403	404
405	406	407	408	409	410	411	412	413	414	415	416	417	418	419	420	421	422	423	424	425	426	427	428
429	430	431	432	433	434	435	436	437	438	439	440	441	442	443	444	445	446	447	448	449	450	451	452
453	454	455	456	457	458	459	460	461	462	463	464	465	466	467	468	469	470	471	472	473	474	475	476
477	478	479	480	481	482	483	484	485	486	487	488	489	490	491	492	493	494	495	496	497	498	499	500
501	502	503	504	505	506	507	508	509	510	511	512	513	514	515	516	517	518	519	520	521	522	523	524
525	526	527	528	529	530	531	532	533	534	535	536	537	538	539	540	541	542	543	544	545	546	547	548
549	550	551	552	553	554	555	556	557	558	559	560	561	562	563	564	565	566	567	568	569	570	571	572
573	574	575	576	577	578	579	580	581	582	583	584	585	586	587	588	589	590	591	592	593	594	595	596
597	598	599	600	601	602	603	604	605	606	607	608	609	610	611	612	613	614	615	616	617	618	619	620
621	622	623	624	625	626	627	628	629	630	631	632	633	634	635	636	637	638	639	640	641	642	643	644
645	646	647	648	649	650	651	652	653	654	655	656	657	658	659	660	661	662	663	664	665	666	667	668
669	670	671	672	673	674	675	676	677	678	679	680	681	682	683	684	685	686	687	688	689	690	691	692
693	694	695	696	697	698	699	700	701	702	703	704	705	706	707	708	709	710	711	712	713	714	715	716
717	718	719	720	721	722	723	724	725	726	727	728	729	730	731	732	733	734	735	736	737	738	739	740
741	742	743	744	745	746	747	748	749	750	751	752	753	754	755	756	757	758	759	760	761	762	763	764
765	766	767	768	769	770	771	772	773	774	775	776	777	778	779	780	781	782	783	784	785	786	787	788
789	790	791	792	793	794	795	796	797	798	799	800	801	802	803	804	805	806	807	808	809	810	811	812
813	814	815	816	817	818	819	820	821	822	823	824	825	826	827	828	829	830	831	832	833	834	835	836
837	838	839	840	841	842	843	844	845	846	847	848	849	850	851	852	853	854	855	856	857	858	859	860
861	862	863	864	865	866	867	868	869	870	871	872	873	874	875	876	877	878	879	880	881	882	883	884
885	886	887	888	889	890	891	892	893	894	895	896	897	898	899	900	901	902	903	904	905	906	907	908
909	910	911	912	913	914	915	916	917	918	919	920	921	922	923	924	925	926	927	928	929	930	931	932
933	934	935	936	937	938	939	940	941	942	943	944	945	946	947	948	949	950	951	952	953	954	955	956
957	958	959	960	961	962	963	964	965	966	967	968	969	970	971	972	973	974	975	976	977	978	979	980
981	982	983	984	985	986	987	988	989	990	991	992	993	994	995	996	997	998	999	1000	1001	1002	1003	1004
1005	1006	1007	1008	1009	1010	1011	1012	1013	1014	1015	1016	1017	1018	1019	1020	1021	1022	1023	1024	1025	1026	1027	1028
1029	1030	1031	1032	1033	1034	1035	1036	1037	1038	1039	1040	1041	1042	1043	1044	1045	1046	1047	1048	1049	1050	1051	1052
1053	1054	1055	1056	1057	1058	1059	1060	1061	1062	1063	1064	1065	1066	1067	1068	1069	1070	1071	1072	1073	1074	1075	1076
1077	1078	1079	1080	1081	1082	1083	1084	1085	1086	1087	1088	1089	1090	1091	1092	1093	1094	1095	1096	1097	1098	1099	1100
1101	1102	1103	1104	1105	1106	1107	1108	1109	1110	1111	1112	1113	1114	1115	1116	1117	1118	1119	1120	1121	1122	1123	1124
1125	1126	1127	1128	1129	1130	1131	1132	1133	1134	1135	1136	1137	1138	1139	1140	1141	1142	1143	1144	1145	1146	1147	1148
1149	1150	1151	1152	1153	1154	1155	1156	1157	1158	1159	1160	1161	1162	1163	1164	1165	1166	1167	1168	1169	1170	1171	1172
1173	1174	1175	1176	1177	1178	1179	1180	1181	1182	1183	1184	1185	1186	1187	1188	1189	1190	1191	1192	1193	1194	1195	1196
1197	1198	1199	1200	1201	1202	1203	1204	1205	1206	1207	1208	1209	1210	1211	1212	1213	1214	1215	1216	1217	1218	1219	1220
1221	1222	1223	1224	1225	1226	1227	1228	1229	1230	1231	1232	1233	1234	1235	1236	1237	1238	1239	1240	1241	1242	1243	1244
1245	1246	1247	1248	1249	1250	1251	1252	1253	1254	1255	1256	1257	1258	1259	1260	1261	1262	1263	1264	1265	1266	1267	1268
1269	1270	1271	1272	1273	1274	1275	1276	1277	1278	1279	1280	1281	1282	1283	1284	1285	1286	1287	1288	1289	1290	1291	1292
1293	1294	1295	1296	1297	1298	1299	1300	1301	1302	1303	1304	1305	1306	1307	1308	1309	1310	1311	1312	1313	1314	1315	1316
1317	1318	1319	1320	1321	1322	1323	1324	1325	1326	1327	1328	1329	1330	1331	1332	1333	1334	1335	1336	1337	1338	1339	1340
1341	1342	1343	1344	1345	1346	1347	1348	1349	1350	1351	1352	1353	1354	1355	1356	1357	1358	1359	1360	1361	1362	1363	1364
1365	1366	1367	1368	1369	1370	1371	1372	1373	1374	1375	1376	1377	1378	1379	1380	1381	1382	1383	1384	1385	1386	1387	1388
1389	1390	1391	1392	1393	1394	1395	1396	1397	1398	1399	1400	1401	1402	1403	1404	1405	1406	1407	1408	1409	1410	1411	1412
1413	1414	1415	1416	1417	1418	1419	1420	1421	1422	1423	1424	1425	1426	1427	1428	1429	1430	1431	1432	1433	1434	1435	1436
1437	1438	1439	1440	1441	1442	1443	1444	1445	1446	1447	1448	1449	1450	1451	1452	1453	1454	1455	1456	1457	1458	1459	

हंतं नुक्तफले नियुक्तं यंत्रे युक्ता कांतिकला भवति ॥ अथ द्वाभ्यां लवानां जुजांशानामधमघ्न्यादिकलादिफलं
भवति तदा दती वनोग्यांतरकताडितं षष्ठ्या भक्तं नुक्तफले द्विस्रवायंत्रे म्यष्टः कांतिकला भवति ॥ अत्रोदाहरणं ॥ जुज
शा १० ३० ॥ ततः कांतिकल ज्या कोष्केषु दशांशनामधः प्राप्तं फलं कलादि २३ ८ २ तद्विंशतिरं २३ ४० अनेमांतरे
एषर्वैकास्वित्रात् ३ गुण्यते जा ता ६ ९ १२ ० अर्धे कस्य षष्ठ्या भागेलब्धौ २० निउपरिशिष्टं ते जा ता विकला ७ १०
एषां षष्ठ्या भागेलब्धं कला ११ विकला ५० एतत् नुक्तफले २३ ८ २ नियुक्तं कांतिकलाः संपन्ना २५ ० ५२ एवं सर्वत्रायदि
लवानामधकलादिकं न भवति ॥ तत्रेयं प्रक्रिया यथा बुक्ता आनवंति ॥ ६० तेषामधकलादिकं नास्ति ॥ ततः कांतिकल
फलज्या कोष्केषु लवानां शानामधः प्राप्तं फलं कलादि १४ ५५ एता एव भवति भागात्मकस्य राशि त्रयस्या परमकांति
कला भवति ॥ आयामेव कलानां षष्ठ्या भागेलब्धा परमकांतं शा २३ कला ३५ एव मन्यत्रापि कांति साधनं कार्यं ॥ अ
थ पत्यं ग्रात्रिषट्कस्या ह्योरात्रप्रमाणे त्पांदनां जुजांशानां विपरीता मोवी मे षप्रमाणे न हता दृता वा जुज्य
या ते क्रमेणा ततो यद् उच्च ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

9

यत्र राटी

फलं तस्य कलं दिनस्यानुजनागानां या विपरीतमौ वीर उक्रम ज्यायामेष प्रमाणे न गुणयित्वा नुक्रम ज्याया
भक्त्या तत्तत्प्रमाय फले तद्दिनस्य शकलं संभवति अथोदाहरणं यथा प्रथमं शकस्य नुजलवा ॥ १०० ॥ एषा नु
क्रम ज्या ॥ ०३३३ यामधनुला प्रमाणे ॥ १०३३ गुण्यते जाता ॥ ६२० ॥ १२५४ अधस्तं नाकम्याषष्ट्या भागे लब्धा ॥ १०३३
शेषाषष्टलब्धा का २०३ पारतना के ६२० रूपे योजिताः जाता ॥ ६४० एतेषामपि षष्ट्या भागे लब्धा ॥ १०३३ पारितनश्च नष्टानि
प्राप्यते जाताः क्रमेण कलादयः ॥ १०१४० ॥ ५४ तत आमां नुक्रम ज्याया ६२५० नागद्वयार्थं दत्ता ॥ १०३३ षष्ट्या गुण्य
ते तन्मध्ये ४० दियंते जाता ॥ ६४० ॥ ५४ एवं नुक्रम ज्यां कोषि ६२५० षष्ट्या गुणितः पंचाशन्मिलिते जातः ॥ ३२०० एष निः
श्वर्तकस्य भागे लब्धं फलमागद्यं ॥ १०१ एतत्प्रथमाशय्य ज्याफलं शकलमुच्यते एवं नवत्वं शानया वत्तर्क ज्याख
डा न्यत्यादितानि अथ नवतेरधिकांशेषु ज्याखंडोत्पादना प्रवर्द्धमाने नवतेरथांशो क्रम ज्यांति मयानुयाता
॥ नुलाजमाने नहता विभक्ता क्रम ज्याया बाहु जया लवदि एनवतेरुपर्यग्रीत्यधिकशतपर्यंतं यद्यंशश्च द्विर्भवति त

PAGE(S) MISSING

NOT AVAILABLE

9-10 |

१२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २० २१ २२ २३ २४ २५ २६ २७ २८ २९ ३० ३१ ३२ ३३ ३४ ३५ ३६ ३७ ३८ ३९ ४० ४१ ४२ ४३ ४४ ४५ ४६ ४७ ४८ ४९ ५० ५१ ५२ ५३ ५४ ५५ ५६ ५७ ५८ ५९ ६० ६१ ६२ ६३ ६४ ६५ ६६ ६७ ६८ ६९ ७० ७१ ७२ ७३ ७४ ७५ ७६ ७७ ७८ ७९ ८० ८१ ८२ ८३ ८४ ८५ ८६ ८७ ८८ ८९ ९० ९१ ९२ ९३ ९४ ९५ ९६ ९७ ९८ ९९ १००

१२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २० २१ २२ २३ २४ २५ २६ २७ २८ २९ ३० ३१ ३२ ३३ ३४ ३५ ३६ ३७ ३८ ३९ ४० ४१ ४२ ४३ ४४ ४५ ४६ ४७ ४८ ४९ ५० ५१ ५२ ५३ ५४ ५५ ५६ ५७ ५८ ५९ ६० ६१ ६२ ६३ ६४ ६५ ६६ ६७ ६८ ६९ ७० ७१ ७२ ७३ ७४ ७५ ७६ ७७ ७८ ७९ ८० ८१ ८२ ८३ ८४ ८५ ८६ ८७ ८८ ८९ ९० ९१ ९२ ९३ ९४ ९५ ९६ ९७ ९८ ९९ १००

इति राशिषकस्य नागादिकाद्यज्याफलकोष्टकाः सांतरा समाधाः ॥ ७७ ॥ ॥ अथ द्युज्याफलानयनं
मवेदुताधः कलिकादिकं यत्तु खंडयोरंतरं युगां सताषष्ट्या दत्तं भुक्तफले निविष्टं भवंत्यहज्यशिकलानि सम्या
का ॥ ११ ॥ लवानामधमूघादिकलादिकं भवति तदा भुक्तफले निविष्टं भवंत्यहज्यशिकलानि सम्या
लषष्ट्या उपहृतं लब्धं भुक्तफले निविष्टं द्युज्याशिकलानि भवति अत्रोदाहरणे ॥ कल्पनया यथा लव तद

श्री.
११

यत्र राशि

षः कलानि त्रिंशत् ॥ ततो द्युज्याफलज्याकोष्ठकेषु प्रथमांशाधः प्राप्तं द्युज्याफलं ॥ ११ ॥ अनेन
तरेणाधमूघा कलासिंशत् ॥ संगुणिता जाता ॥ १२ ॥ अस्यां कस्य षष्ट्या नागे लब्धा ॥ १३ ॥ उपरिष्टयष्ट्या निष्ठापितानेवां
नागाषाष्ट्या पांचकलाः सिता ता भुक्तफलदशा ॥ मधोक्षिष्टा जाता पंचदशा ॥ एतत्तस्माद्विशिकस्य द्युज्याफलं
॥ १४ ॥ एवमन्यत्रापि कार्यं अथाग्रे मयं त्रैलोक्यांशानामुक्तं तव लयके द्युज्यायाद्विप्रमाणा नयनं ॥ पलेर्विह
नागमनाष्टरूपा ॥ १५ ॥ शेषा मृथादाः एतन्मेषधर्याः ॥ शेषा दोषा मरखंड केभ्यो द्युज्याफलं विपरिधाधनी
या ॥ १६ ॥ तददोषज्ञेन फले न हानं युक्तं वशेषोदफलं विधाय अर्द्धविधेयं वततः कमेण के द्भवेत्तया मयुतं
ऊजारव्यो ॥ १७ ॥ शेषे तथा दोषे यथे सितांशाः शेषा मृत्तः पूर्ववदुक्करीत्या ॥ कार्याणिके द्याणि मविप्ररोणि भूजा
रव्ये द्या तुरतः स्फुटानि ॥ १८ ॥ एषाथारव्या ॥ पलमहेन द्यादांशा उच्यते ॥ पलेः ध्रुवदेशादांशो गगनाष्टरूपा
अत्रोत्पदिकं शतांशा ॥ १९ ॥ हीना कर्तव्याः ॥ शेषांशा अदांशाश्च एतच्छेषाः ॥ इततोऽतः शेषादांशो द्युज्या

श्री०
१५

गरेनुडोमासुनेवा २७५ अथोष्मयां २७२ गोपालगिरी २७२ लुदाजं २७३ गोपीमक्ष २७४ पाकोलजलात्यां वा
२७४ कांपिलयां २७५ शिवश्रीने २७५ उच्चनगरे २७६ वरुणनगरे २७६ श्रीयोगिनीपुरे २७६ दीरोहीत
के २७४ पमेरठे २७५ मूलश्रीने २७५ हांसां २७५ श्रीपीरोज नृपानृपां कितहिमारपीरोजावादे २७५ पमरधु
तीपत्तने २७५ ठाणेपरे कुरुदौने २७५ कपिश्रुले जालंधरे पुन्नामयमाणके २७५ देपालपुरे २७५ लाऊरमु
धपुरे २७५ वदस्यं २७५ नृम २७५ दामगां २७५ पोशंजा २७५ बलष २७५ नयमाबूर २७५ कात्रमीर २७५
२० तिरिमिदि २७५ वावरद २७५ विगानी २७५ छेयरा २७५ मरकंद २७५ बुआरयमा २७५ कायगर २७५
लागार २७५ यंतानिवासभूमिः । तथा कार्यमति एवभ्योऽहं शाविलोक्याः ॥ अथगणकानाहिताय कियताम
थदोशानामौश्याया केदं स्यात्तामाः सांतरापरमदिनविष्णुवलायात केसमहिताः प्रदर्श्यते । यथा
नवीनयाथमौशमिश्रयंत्रकरणमैथ्यः सवरमायाति ॥

श्री०
१५
यंत्ररुद्रा

अथात्रयंत्रेन वमंडलार्थं ग्रंथनिष्ठात्रिषोत्पन्नमायनद्वात्रिंशन्नक्षत्रका मौश्याया विदोपमहिताः प्रोच्यंते धिसंक्रियंशास्ततवो
निवेदाः ॥ ६४३ मौश्याः रोना निलवा २७१ ॥ मृथास्मिन्ननद्यंतकनंदधरा निवेदाः ॥ ११८३ बाणोम्यया म्यो मिशराश्चमा
दीप ३२३ २१ तत्रैवेने वदयमनिवेदाः ॥ २२४३ मौश्याश्चरमूर्कभुजानरवीः स्फः । तत्राश्चमं बाणकराकुदोषो बाणोम्य
मौश्यामुनयो नरवा म्युः ॥ ७२० २२ अजेनमंगदितयत्रिवेदाः ॥ २६४३ मौश्याः शरश्चंद्रशारखबाहाः ॥ ५११ २० मनु
थशाषष्ठतयः मुराः स्फः ॥ ११८३ ३३ मौश्याः स्थपत्रीविकराः स्वमेवा २३१ ॥ दृषेपरामदशा निवेदाः ॥ २३४३ म्योश्रुपु
रस्याभृगुणा वियच्चा ३० ॥ ब्राह्मं नृनिदि लोकमोम्या २११ ३३ बाणमुया म्यो विशिखादिशश्चापा १० २४ नृ
युग्मपादे करिण निवेदा २१ ४३ याम्यो द्विधराः खरामः १७३ ३० ३५ तस्मिन् षडाम्यो मिधरा मिवाणा २१ ३३
५३ बाणोम्यया म्यो द्विकराश्चमार्द्धाः ॥ २२३ ३० तच्चमृमेश्रुत्यनुजा मिवाता २० ५३ याम्यो म्युष्ट्रीनगभूमयः ख
१७३ ॥ २६ कर्कवधिस्पंभगवानगमिः ब्रयो ६४ याम्यश्रुदोत्रौ ला ७५ ० तत्रैव वा द्यं ततवः मुराः स्फः ३६३ ३३

PAGE(S) MISSING

NOT AVAILABLE

16-17

श्री०
१२
१३

त्रध्वकः मेखादिग्राश्रियोयामोम्यविभागेनक्षत्राणामंतरिक्षेपाः तथा मर्वेषु नक्षत्रेषु ध्रुवकेषु घ्राणं वाशतविकलाज्ञेयान
नक्षत्रनामादिग्राश्रियो नक्षत्रकोष्टके न्योवधाएतानि नक्षत्राणि द्धकर्मशुद्धानि तवागुदूपदेशाद्यं वेष्टाया निदकर्मकरणं पु
स्रीद्वर्त्तवगोले पुनर्द्वैकतेन क्षमरहितानि म्नाथानि इति शेषः अथ ग्रंथादिनक्षत्रध्रुवकेभ्यो भीष्टवर्षेन क्षत्रध्रुवकानयनमाह
॥ दिनंदमूर्यै १२८२ रहिताः शकब्धानो श्वित्रोलैगुणता स्वष्टे रासं लवाद्येन युतं भमिष्टे वर्षे भवेत्सायननामकं ततो ३८
अथ ग्रहार्था ॥ इष्टवर्षस्य शकाब्दादिनंदमूर्यै १२८२ मूनयिवाशेषानो धिात्रोलैगुणयिवा स्वष्टे र्ना ज्यातेभ्यो लब्धेय
केलादिफलं ते धक्ताः मायनाग्रंथादिनक्षत्रध्रुवका इष्टवर्षस्य ध्रुवका भवति। अथ ग्रंथशके १२८२ वर्षे मध्यमः एषु
पातितेषु शकेन किंचिच्छिति। ततः कल्याणशके १३०४ वर्षे नक्षत्रध्रुवकोदाहरणं प्रादर्शयताम्यापनाशके १३०
४ वर्षे भ्यो दिनंदमूर्यैः पातयेत् शेषा १२ नो श्वित्रोलै ७२ गुणं ते जाता ८६४० यवनमते नक्षत्राण्ये के कं मेधादि
राशयं शवर्ष ६६० वर्षे रति कामतिवर्षं च उथं वाशदिकलाश्चा ५४ तत एषामष्टा त्पा ८०० भागे लब्धा कला १० वि

श्री०
१२
यंत्ररा

कला ४८ एता पूर्वां के पायने मेखादिध्रुवके ० ६४ ३५२ क्षिप्येते जातो भीष्टशके इष्टवर्षस्य नक्षत्रध्रुवकोयां ० ६४ ५५४ ४०
एवं शषा अपि ग्रंथादिनक्षत्रध्रुवकाः ध्रुवमपूष्याः अथ नक्षत्राणामुत्तरनक्षत्रेभ्यः क्षीयं कात्यानयनं मेखादावुत्तरगो
ले भुलादौ दक्षिणमृतः कांतो त्रिराश्रियुग्मा ज्वावाण कोटि ज्ययाह ता ४० भाज्यां तया ततश्चापेन वतः शोधिते पुनः गुणे
न मेक्ती बाण ज्वापुसं भागादिकं ततः ४१ स्यादंतरं परा कोटि स्रेन युक्ता तथो निता गोले भवाणयो रि क्ये मेदेवा सप्तमो गु
णाः ४२ हतः पूर्वधनुर्मीयमिक्तश्चां तज्याया ततः लब्धी चोपयुत हीनं कर्त्तव्यं चारेण ततः ४३ गोले भवति लो रि
क्ये मेदे स्यादपमः स्फरायाम्योम्यविभागेन मध्यारखा ममाश्रिता ४४ एषा व्याख्या ग्रंथादिनक्षत्रध्रुवके मेधादि
राशिषट्के उत्तरगोलेः १ उलादि राशिषट्के दक्षिणगोलेः १ ततो नक्षत्रध्रुवकं पटलके मंष्ट्राथ तत्र राशि
षट्काने राशित्रयं ३ रत्ना १४ वत जीवा ममानीयते। मानुज ज्वा मत्रिराशि ज्वा ध्रुवक ज्वाव कथ्यते या बाण
कोटि ज्ययाहवां यं ज्यया ३६० भाज्या ततः प्राप्ता चोपमानीय नवता ८० विंशोध्यत छेपाडु त्यनेन नक्ष

त्रशरज्यायां न कांयां ततो लब्धं नागादिकं मंतरमुच्यते ततः पूर्वोक्ते यथादिनक्षत्रध्रुवकेतदधश्चित्तवाणो न मरु
 कदिकश्चित्तवादेको भिन्नदिकश्चित्तवातयो नोदवप्रागनीतिनां ताराणपरमकांतिभागाः ॥ २३३५०॥ केमेण युक्त
 हीनाश्चक्रियं तो ततः प्रेषां जीवामानीयश्च नीयतवापस्यानीया जीवया मासंगुण्यां त्यज्यया ३६०० विभज्यते
 ते तीयध्रुवं मा अप कम ज्या ततो लब्धं वायमानीय पावको लैको गोलभेदे वनक्षत्रशरेण युक्तं हीनं वने
 तं मन्वाणमवधरेषा तसौ मृया मृविभागे नक्षत्राणां स्फुरा अपमाः कां त्यशा भवन्ति अत्रोदाहरणं सवं
 १४२० मे रवश्चित्तवा उत्तरे गोलै मायाना रोहिणी नक्षत्रध्रुवकः ॥ २११३३५२॥ शरो या मृः ५१०॥ ध्रुव
 व २११३३५२ राशि त्रयद्वये जातः सत्रिभापा ११३३५२ अस्मादात्रितयाद विकल्यो त्यादिना भुज त्यामा
 नीयते भुजो यथा ॥ २०॥ २६॥ ततः कम ज्या कोष्टकेषु भुजभागा नो २० अधशा संफलं १६८०६॥ तद



धोंतरं ५५१३॥ अनेनांतरेण भुजनागानामधःश्रुविकले २६॥ जागुणितेषध्यानके लब्धे फले २४३ पूर्वफलो १६
 ८०॥ ६॥ नियुक्ते जातानुज ज्या १०१४॥ एवमवत्रापि अथ बाणस्य कोट ज्यातया म्रो रोहिणी शरः ५५१०॥ अयं नव
 तेः शुद्धो जातः ॥ ८४५०॥ अतः प्राग्दानीता जीवा ३५५५२५॥ अनया प्रागानीत भुज ज्या १०१४॥ गुणिता जाता ६१४५
 ८४१५८॥ अस्यां अंशं ज्या ३६०० भागे लब्धः १०००॥ १२॥ अत्र कल्पनया इयमेवामो वी॥ अतश्चाणनयनं यथा
 कम जीवा कोष्टका नामष्टा विंशति भागानामधःफलं १६८०॥ ६॥ पूर्वा नीतायाः कलादिमो र्वाः १०००॥ पात्य
 ते शेषाः १०१६॥ तेन वापांशाः २००॥ १०॥ प्राप्ताः शेषा १०१६॥ ध्रुव्या मंगुण्या विंशत्यधश्चित्तनांतरेण ५५१३३ वि
 भज्यंते लब्धं कलादिकं फलं १८३४॥ जातं जीवा तश्चापमिदं २०१८३४॥ एवमवत्रापि वापं माध्यं अस्मिन्वापेन
 वत ८०॥ शोधिते शेषं भागादि ६१४१२६॥ अतः प्राग्जीवा ३१६८॥ २०॥ अनया प्राग्दानीतायां नक्षत्रशरस्य ५
 १०॥ ज्यायां ३२४१०॥ भक्तीयां लब्धं भागादिकं मंतरं १६८०६॥ ततः त्रिंशति शोपरहितस्य रोहिणी नक्षत्रस्य तच्छरस्य वाम

श्री०
२९
२१

नदिकेनगोलभेदोप्रीतितातेनांतरण० द्वाचपरमकांतिभागा२३३५० विजो ज्यते जाता२३२५५२१ अतः पाय ज्यया १४
३५२२ एषाषागानीतवाप कोटिज्यया ३६६१२० गुण्यते जाता ४५४५६३३१७ अथ ज्यया ३६०० मज्यतो लब्धा ५५३ मज्या १२६
२४५५ अथ ज्यया गुणापमाधितं २०३२११ एतएव कांतिभागा ज्ञेया अत्र राशित्रयवर्जितरोहिणीनक्षत्रस्य तद्वाणस्य च नि
नदिकेनवापयमध्मच्छेदो धिते वशिष्ठारोहिणीनक्षत्रस्य मोम्याः कांतिभागाः सिद्धाः १५१२२१ एतावता रोहिणीनक्ष
त्रमध्वरेखा तत्तस्मा एतावद्विनीगोमिष्टति अत्र या युक्तक्या मवेष्टानक्षत्राणां कांतिमाधने कर्तव्यं ॥ ७॥ अ
थ प्रकारांतरेण कांतेरानयनी अथवा नीयनकांतिनक्षत्रध्रुवका ततः । तया शरस्य संयोगो वियोगो विक्रमेदतः ।
४५ तस्माज्जीवाहतो यथा वाप उक्तमकानिको टिज्याष्टा कांतिको टिज्यनकां पासां धनुर्भवत् ४६ तएव कांतिभा
गास्यः मोम्याया म्यायथा विधि कांतिमायकयो र्योगात् वियोगे शेषतश्च दिक् ॥ ४७ एषां व्याख्या अथ वेति प्रकार
रांतरेषां होलं विचार्य नक्षत्रध्रुवका तभुजमानीय तस्मा कांतिरानीयते । तया कांत्या महशरस्य दिगैक्ययोगो
दिग्देवियोगश्च कियते । तस्मात्तु कांतियुक्तां कांतिपाद्यमाना नीयपरमकांतिको टिज्या मुत्याद्यतया मा

श्री०
२९
यंत्रराशे

मज्यतो ततो यद्वचं तस्मात्पाद्यवापमाधितं वापमेव प्रसुत नक्षत्रस्य मोम्याया म्याश्च कांतिभागा नवन्ति एषा मोम्या
वैयामृचवकथमिफथ्यतो दिगैक्ये कांतिबाणयो र्योगा नक्षत्रदिक् मवेष्टे वकांतिः । दिग्भेदे धिकाश्रुनेपातिते शेषा
त्यसुतनक्षत्रस्य कांतिदिक् स्याता अत्रोदाहरणमेवाश्रितवा उतारंगोले मायनो रोहिणीनक्षत्रध्रुवकाः ॥ २१॥
३३५२२ शरीया म्यः १५१० अत्र पात्या भावादयमेव ध्रुवको भुजः । भुजां शः १६१ ३३५२१ एषां कांतिरानीयते य
था । कांतिफलज्या कोष्टके भुजभागा नां ६१ अधम्रात्या संफलं १२२५५७ तदधोतरा १२१४१ अनेनांतरेण भुज
भागानामधम्रिते विकले ३३५२ गुणिते षष्ठ्या भक्ते लब्धं कलादिकं फलं ६५४४ पूर्वफले १२२५५७ तद्वैपे जा
तीकांतिः कलामिका १२३५५१ एवं सर्वत्रापि कांतिः साध्या षष्ठ्या भागे लब्धा भागादिका कांतिरुत्तराः ॥ २०॥ ३५
५१ रोहिणी शरीया म्यः १५१० अत्र निन्नादिक् वादनयो र्वियागे धिक्यवात् कांतेः शरेपातिते कांतिशेषमुत्तरां १५
२५५१ अस्मात्पाद्यमाधिता जीवा ६५५५० अयं परमकांतेः १२३३२५० कोटिज्यया ३२६६१२१ गुण्यते जाता

श्री०
२२
२२

२१६००८३४४॥ आम्नाः प्रागानीतकांतेः ॥ २० ॥ ३५ ॥ ५१ ॥ कोटिज्याया ३३६६५४ भागेलब्धं फलं ८३७४२५४ अस्मा
त्प्राग्वापा १५५५१ एतच्चापमेव कांतं एते च प्रागानीतकांतिरेषम्यमौम्यवाच्यौम्याबोध्याः कांत्यानयने पूर्वोक्तायाः
मपत्फलायाश्च युक्ते कलासु विकलासु च किंचिदंतरं अस्मिन् दत्तं चान्न दोषायाश्च यनक्षत्राणां च सूनक्षत्रध्रुवकेयः
सुसुदृक्मीनयनं ॥ दृक्कर्मण्यनं मवाभगादमथ कर्कजा मत्रिभज्या परकांति मोर्वीहिवा विभाजिता ४८३ कोटु
कांतिकोद्याख्यमोर्वी प्राप्ता फलादियत्तेन हवेषु कोटिज्या विभाजां तज्यया ततः ॥ ४८३ लब्धा कोटु कोटिज्या उ
त्पाद्य भशरा कुणः ॥ सतां शोक्त फलेनोक्तधनुः कोटिज्या यो धृतः ॥ ५० ॥ प्राप्ताच्चाप उ दृक्कर्मफलं पूर्वोक्त युक्तिः ॥ न
क्षत्रबाणा यारैकोऽणं भेदे धनुं भवेत् ॥ ५१ ॥ षां धारव्या ॥ दृक्कर्मनयने मृगाद्यं कर्कजां मोम्यं याम्यं वायनं विचार्य
यथा दिनक्षत्रध्रुवकस्य विराशि दोषात्प्राग्दुज्या मानीय परमकांते २३ ॥ ३५ ॥ ० ॥ मोर्वी १४४० ॥ १५ ॥ सतां च व
प्रागानीतकांतिकोटिज्या विभज्य ततः शस्तेन फलेन ३५ कोटिज्यां हवा अत्यज्या ॥ २६०० ॥ इषुं भज्यते ॥ तत्रो ल

श्री०
२२
यंत्रराय

बादं कातभागार्थकोटुस्तकोटिज्यामानीयमुच्यते तदनुशरज्यामानीयोक्तफलं केन कृत्वा समागानीतध
नुः कोटिज्या ३५ क्रियते ॥ ततो लब्धा चापमाध्यते ॥ तदेव दृक्कर्मफला एकदिक् चान्नयनवाण्योरेकोऽणं भि
न्नदिक्वेन तयोर्भेदे धनुं भवति ॥ तत्फलमिष्टवर्षम्यथा दिनक्षत्रध्रुवकेयथा वितं ऋधने च ततः तन्नक्ष
त्रे दृक्कर्म शुद्धं भवति ॥ अत्रोदाहरणं ॥ यथामकरादिचाडत्रायने मायने रोहिणी ध्रुवकः ॥ २१ ॥ ३३ ॥ ५२ ॥ शरीया म्यः
॥ ५१ ॥ ० ॥ रोहिणी ध्रुवका दशित्रययुक्तात्प्राग्दानीतानुज्या १०१४ ॥ ३५ ॥ परमकांते ॥ २३ ॥ ३५ ॥ ० ॥ मोर्वी १४४०
॥ १५ ॥ गुणितानीता ॥ २४६८८०४ ॥ ३२ ॥ न कांति १५ ॥ ररा १ कोटि ७४ ॥ ३७ ॥ ५८ ॥ ज्यया ३४७ ॥ १६० ॥ भागेलब्धं फ
लं ७१ ॥ १५ ॥ अन्ननरोहिणी शरः ॥ ५१ ॥ ० ॥ कोटि ७४ ॥ ५० ॥ ज्यया ३५ ॥ ८५ ॥ २५ ॥ गुणितानीता ॥ २५५ ॥ ० ॥ २७ ॥ ३६ ॥ अत्यं
यैज्यया ३६०० ॥ भागेलब्धं ७०० ॥ २२ ॥ अस्माद्भागार्थं प्राग्दुनुः ॥ ११ ॥ २१ ॥ ५ कोटि ७८ ॥ ३७ ॥ ५५ ॥ अतः प्राग्ज्या
३५२ ॥ २० ॥ इयं धनुः कोटिज्या भागार्थं ८५ कृम्याथते ॥ अथ शरः ॥ ५१ ॥ ० ॥ ज्यया ३२४ ॥ १० ॥ इयं पूर्वफलेन ७१ ॥ १५

श्री.
२९
यत्रंगरी

एतदोहिणीनक्षत्रमथिचुनराशिष्ठित्वाच्च कोदयमिचुनप्रमाणेन ३२ गुणितं जातं ३२११२ एतत्तरवस्याग्निभिर्भजेत
३००० लब्धं वा द्यफलं ११४१४ एतदेवदकर्मफलं प्राग्द्रोहिणीनक्षत्रे धनं वशातद्वैथं जातं दकर्मशुद्धोहिणीनक्षत्रं
२१३०६ अथप्रागानीनदकर्मशुद्धमथ तयास्य चां वणका विकला ४३ म्वल्यांतरवानदाषः अथनक्षत्राणां स्वापमवरो
नानामोम्ययाम्यस्वाहोत्रनयने स्वाहो एतेनयनेमोम्ययात्रहीनाधिककर्मतेमोम्ययाम्यापरमोम्यस्यानवतिथ्ययः
परं ५४ नायाद्योपथक्योर्कस्वडज्या समागता यत्र द्येपिनक्षत्रे मुखं स्पष्टतरं भवेत् अथनयोवस्वियायत्रामोम्ययाम्य
मथतया द्विषभवति तत्रमोम्ययत्रे स्वाहोत्रनयनेन वतिर्नक्षत्राणां मोम्यकोतिभागे हीनार्थुक्ता म्यातपरेयाम्ययं
त्रे उत द्यतयकोर्थः सैव नवतिस्त्रिमोम्ययाम्यकोत्पत्रिशुक्ता हीनवस्याततायाद्यो नवतिशेषयोर्धज्यास्वडके
भ्यः आगतं धज्याफलं नक्षत्राणां मोम्ययाम्यं स्वाहोत्रमं ज्ञं स्पष्टतरं मुखं भवेत् मोम्यस्वाहोत्रम्योदाहरणं य
थारोहिण्या उत्तराकांति ५१२२१ एषामोम्यतयानवतेर्नक्षत्रोध्यते शेषा ७४३०५६ एभ्यः प्राग्धज्यास्वडकेभ्यः आ
नीतं धज्याफलं १४१५० एतदेवरोहिणीनक्षत्रामोम्यस्वाहोत्रं अथयाम्यस्वाहोत्रनयने उदाहरणं रोहिण्या

मोम्यकांति १५॥२२॥१८॥मोम्यवानवातो ८०॥यो ज्यतेजाता १०५॥२२॥१८॥अस्यमाद्यज्याखंडकेभ्यः प्रागदानीतं द्यज्या
 फलं २५॥४०॥एतद्रोहिण्यायाम्यं द्वाहोरात्रं अथानीतोऽग्न्यापनार्थं द्वाहोरात्रं वार्ष्वेन दोत्रं द्वाहोरात्रं किंचिदुच्यते अथ
 दयोयहाः मनक्षत्राभ्यश्च सर्वद्वितितये उदीययात्रवाकालेनामुदितितये मयंतमकालमेषामहाः तएवामुदितितिजा
 द्यावता कालेन सर्वद्वितितिजं प्रयाति मकालमेषारात्रिः अतएव द्यज्यास्वा १३०॥४०॥वद्वाहोरात्रं एतत्प्राथम्येन अथ कानि
 विनक्षत्राणि मोम्ययां च कानि विद्याम्ये कानि मिश्रं न भवति तेषां लक्षणमुच्यते तत्र यम्यन दोत्रं स्य मोम्यं द्वाहोरा
 त्रं त्रिंशदंशमध्यग्याम्यं वंशं द्वाहोरात्रं त्रिंशदंशं नक्षत्रं मोम्यं यत्रोपापयुज्यते तस्य उद्याम्यं द्वाहोरात्रं त्रिंशदंशं नक्षत्रं मोम्यं
 उत्रिंशदंशं नक्षत्रं यम्यं यत्रोपापयुज्यते तस्य उद्याम्यं द्वाहोरात्रं द्वयमपि त्रिंशदंशं नक्षत्रं मिश्रं यत्रोपापयुज्यते
 यानि जिन्नक्षत्राणि मोम्यं द्वाहोरात्रं १२०॥४०॥याम्यं ४०॥४०॥एतत्सर्वदा मोम्यं यत्रोपापयुज्यते तस्य एव अत्र प्रसुतायाः रा
 हिण्याश्चापामोम्यं द्वाहोरात्रं १४५॥४०॥याम्यं २५५॥४०॥एतन्नक्षत्रं मोम्यं याम्यं मिश्रं यत्रोपापयुज्यते मोम्यं याम्यं च दिशो ल
 काते मोम्यं याम्यं च वमनि लक्ष्मीं नक्षत्रं यत्रोपापयुज्यते तस्य एव अत्र प्रसुतायाः रा
 काते मोम्यं याम्यं च वमनि लक्ष्मीं नक्षत्रं यत्रोपापयुज्यते तस्य एव अत्र प्रसुतायाः रा

श्री०
 २४
 यंत्रराटी

एतन्नक्षत्राणामुन्नतांशानयनं अक्षम्येष्टकांतिनागांतरोक्ताः मोम्यायाम्यं नतांशाखमध्यातस्वाकाधीनाः खेवरा
 दान्तितांशमध्याक्रोत्राद्वेदेशे भवति ५०॥४०॥यत्रैकशो योगतम्योन्नतांशाः स्वास्वाशोभ्योद्विजाजम्बुदावहोनाकार्यः धा
 मनागद्वितित्यः शेषाम्येष्टकांतिनागांतरोक्ताः मोम्यायाम्यं नतांशाः ५०॥४०॥अनयोर्ध्याय्य अक्षानां नक्षत्रम्येष्टकांतिनागांतरोक्ताः
 कार्यः ॥ अधिकं काक्षानकेपातिते यच्छेषं तदेव मोम्यं याम्यं दिगावैन नक्षत्राणं खमध्यातस्वाकाधीनाः खेवरा
 भवति तेषु वनतांशेषु न वते ॥ ८०॥४०॥पातितेषु शेषाम्येष्टकांतिनागांतरोक्ताः मोम्यायाम्यं नतांशाः ५०॥४०॥अनयोर्ध्याय्य अक्षानां नक्षत्रम्येष्टकांतिनागांतरोक्ताः
 तियात्रु अक्षानां कांतिनागांतरोक्ताः मोम्यायाम्यं नतांशाः ५०॥४०॥अनयोर्ध्याय्य अक्षानां नक्षत्रम्येष्टकांतिनागांतरोक्ताः
 १००॥४०॥तेषु पातितेषु शेषानक्षत्राणामध्याक्रोत्राद्वेदेशे भवति ५०॥४०॥यत्रैकशो योगतम्योन्नतांशाः स्वास्वाशोभ्योद्विजाजम्बुदावहोनाकार्यः धा
 वशात् स्वीय २०॥४०॥मिन्नमिन्नाभवति अत्रोदाहरणं यथा प्रसुतायारोहिण्याम्यं द्यज्याकांति रुतरा १५॥२२॥१८॥टिप्पणी
 याम्यं अक्षानां २०॥४०॥अक्षानां कांतिनागांतरोक्ताः मोम्यायाम्यं नतांशाः ५०॥४०॥अनयोर्ध्याय्य अक्षानां नक्षत्रम्येष्टकांतिनागांतरोक्ताः

श्री०
२५
२५

नतांशाबोद्धव्याएतेषुनताशेषुनवतेःपातितेषुशेषाः७६४३१एतरोहिण्यापरमोनतांशाकथ्यातएतावतोशानरो
हिणीअदौदिष्टभूतागान्स्वमध्यमाकातीतिभाकअनयायुक्त्यामावर्षानक्षत्राणांतेनोनतांशमाधनंकार्योअ
पतित्यर्थयवत्१४२०वर्षस्यविश्वशुद्धिदिनातआगामिमि१४८५वर्षस्ययथादिष्टात्रिंशन्नक्षत्राणांकांतिदृक्
र्ममौम्ययाम्यन्वाहारापरमानतांशाःस्यंष्टीनयायेनदर्शितातयथा॥आरब्धते१११सावारा२३अनन्तरं

संख्या	पादशाब्द	राश्विनाम	श्रेयस्फल	विक्षेपः	दिक्	क्रांतयः	दिग्	उद्धमं	सौ.स्वा.हो	वा.स्वा.	परमो नक्षत्र
१	सुरतलक	अश्विन	१११३१५२	३१०	उ	३१२१०	उ	११२११५६	१२१२	३२१५	८१२५
२	आपनहर	नक्षत्र	११२१३१५२	१३१३०	द	११२१५०	द	०११३३२१	१३१२	८१२६	२०१२६
३	यतलक	मत्तोदर	१२१३१५२	२११२०	उ	३१२१३०	उ	०१३११५५	१०१४	३५१२	८११८
४	सुरतलक	अश्विन	१२१५२१५२	११२०	उ	१११०३०	उ	१२२१२१५	१४१३०	२५१२३	८१२२



३	नक्षत्राकड	अश्विन	२१०१३१५२	६१०	उ	३८१११५८	उ	२१३१२५५	२१३२	४०१२८	८१२६
१०	नक्षत्राकड	अश्विन	२१२३१५२	२१०	उ	३१११५	उ	२१२१२१०	११३०	२२१२८	८१२८
१८	कमल	मत्स्यमुख	१०२६१५३१५२	२३१०	द	३४१०२	द	११५१५२	३४१५६	१०२६	२१२८
२०	रिद्धजगवर्ज	कर्कटपुष्प	१०२२१३१५२	६१०	उ	४११३१	उ	११८१२१५	८११०	४१३२	३४१२६
३१	प्रकविलफरस	पुवर्धपदा	११२२१३१५२	३१०	उ	२१२२१४२	उ	११८३३४६	१२१२१	३११४०	८६१४४
३२	जनपदकल	समुद्रपदा	११२४१३१५२	२१०	द	११११६	द	११२८६२५	२३१५३	१६१६	५०११४

अथमकरादिहस्तयस्यपरमाणमाहामृगस्यहस्तप्रमितिःस्वरामात्रुलजयोनंदमुवाष्टरामाः११लात्रककर्मसूयादि
तिवायवःस्फयंत्रैदमध्यादियमूहनीयापणपएअस्यद्याख्यायंत्रैस्तेयंभवतितत्रवहिर्द्वैतमानमशास्त्रिंशत्त्र०तमहनमि
द्वितीयंमेषुउलयोमुत्पमाणमशाः११८कलात्र०तृतीयंकर्कस्यतत्पमाणागा१२कलाप१इयंत्रिविधमपिहस्तप्रममि
तिर्यत्रमध्यकेदाहनीयाविवारणीयाअत्रामायोयंत्रैस्त्रुध्महस्तंविधायमध्यात्रुद्धिस्तुत्रिंशत्त्रिंशत्परिकल्पनयावहि
ष्टमकरहस्तंभवतितदनुक्तप्रमाणेनमध्येहस्तद्वयमाध्यंअथपरमापमांशानांक्रमन्याकोटिभागानामुक्रमज
यावोत्याद्यमेषुउलाकर्कहस्तद्वयोत्पादनमाहापरापमांशाधिकराःकलाश्चमराग्रयः२३३५मृक्रमन्यावमोवी॥श्रुत्याविश्र

PAGE(S)MISSING

NOT AVAILBLE

26-27

श्री.
२८
यंत्रयोगेश

कस्यनवयवयंतदंततोवामदलान्नमस्यात्तुष्टुएषाव्यापरमापमांशानां२३३५०॥यानरामोधीकोटिज्यामातस्यैवन
रम्यकोटरुक्कमज्ययामंगुण्यात्यज्या३६००युतेयापरमापमज्ययामज्यतेततोलखंलवादिकंकोटिज्यामिश्रितमर्द्धिततं
त्रिरातामंगुण्यपुनमूर्ध्वोक्त्याकोटिज्यामज्यततातोलखंलवादिकंयामदलमवकेभवतिततश्चोष्टतेपूर्वदलेकोटिज्यात
पातितेतच्छेषत्रिराताहवीर्ध्वोक्तकोट्यामज्यतेततोलखंलवादिकंभवकस्यकेदंभवतिएतेनवभवककैंद्राशपमाणेनय
त्रेमध्यमतमौम्येवापक्षेविक्रंजवातउपरिव्यामर्द्धितंभ्राम्यंयत्रोदाहरणंपरमापमांशानां२३३३५०॥एषतेनवतेलंश्वाता
कोटिभागाम्कः६६।२५।००अतःप्राक्कमज्या३२२२२१।१२तथाकोटिभागानामुक्कमज्या२१५८४५अनयाकोटिकमज्या
रे२२२२।१२गुण्यतेजाता०।२५४४०।१२एषापरमापमज्यया१४४०।१५अन्यज्या३६००महिताया५०४०।१५मज्यतेल
खा१४।१३।४६एतेकोटिज्यायां३२२२।१२क्षिप्यतेजाता४०।१२।५८तेद्धोत्रयधिक्षायायते२३५६।२२अनयोरकंदल
२३५६।२२त्रिराता३०गुण्यतेजातं०।६८४।३३इदंकोटिज्यायां३२२२।१२मज्यतेलखंलवदलस्यतागादिदृष्टं२१।
२६अथोष्टतंपूर्वदल२३५६२२कोटिज्यास्त३२२२।१२पात्यतेशेषं८२।४३त्रिरातातायतेजाता२०।२०।१।३।६

२८
श्री.
यंत्रायरी

১৭:১২

७	१८	१८	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
५	४	४	४	४	३	३	३	३	३	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२
६	५	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३
३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३

मुतोमदनश्रीनामागुरुःतदियपदशालिनाविरचितेमुयत्रागमेमहेदगुरुणस्फुटंगणितकर्ममूर्तिगतस्यष्टश्रीपारोजत्रा
 केद्रमवर्गणेपष्टोमाहेद्रमुज्जितःमूरिवरमुदीयवराणांभो जैकष्टगफतामूरिश्रीमलायंडुनाविरविरवितेस्मिन्नुयंत्रा
 जागमव्याख्यानेगणिताभिधःप्रथमकाध्यायःममासिगतःइतिपत्रागमेगणिताध्यायप्रथमःममासः॥ ॥७॥ ॥
 अथयंत्रघटनाध्यायोव्याख्यायतेआद्योयंत्रमन्त्रयध्मउज्जवाविष्नीर्षवस्त्रेष्ठयाकारयिवादिर्घ्यामोपालिमास
 स्यतस्मिन्नायैःकार्योयंत्रकोनुमानअस्यव्याख्यामृत्पिच्छाध्मतवःपित्रलाद्याटनयध्मउमयवायंत्रस्त्रेष्ठयावि
 ष्नीर्षविकराद्यवकारयिवायंत्रमुखानुमानातस्मिन्नुयंत्रेपालवृत्तस्यदैर्घ्यामोआयामविष्णारै॥आर्थैःकार्यैःका
 विष्नीर्षमितिपदांस्वच्छयेत्यत्रायाज्यंततोयावतीछातावद्वितीर्षकार्यमित्यर्थः।याम्येभागेस्यत्रिकोणंकिरीटमीदृक्

३१
 ३२

३२
 श्री०
 यंत्ररही

पोक्तांकोष्टकागारमततमद्येतस्याध्वक्यादांशकानापत्राण्यन्यन्फनतांश्रितानिअस्यव्याख्याकार्यमित्यनुव
 र्त्ततेअस्ययंत्रस्ययाम्येदाहोभागेत्रिकोणकिरीटंशिरमुतवानुऊटमदशांकार्यदृगंतत्यंत्रकोष्टागारमितिपोक्तंतस्य
 कोष्टागारमध्येनान्फतांश्रोफनताश्रवलयैवलयेराश्रितान्यदांश्रानापत्राणिस्त्रेष्ठयाकार्याणिस्त्रेष्ठयेति कोऽर्थःयावता
 देशानापत्राणिकर्तुःमिष्टानितावतकार्यपत्रपत्रेवापरिवर्जितमिन्नदेशोनतवलयांनिकार्याणिएकपत्रेवा न लांश्रा
 स्यपत्रादिघ्नपिडेमाधनीयततामृतालंकोत्यत्राराशयोमेधमुखासंछाद्यंतेयंत्रधिस्यैःममेताः।अस्यव्याख्या।उन्नतांश
 पत्रादेकपत्रमन्यतपिडेद्विगुणमाधनीयंयस्मिन्पत्रे लंकोत्यनामेखाद्याःछादशाधिस्यमहिताःस्वायंतेइदंवपत्रंतवा
 काधिष्ठितवाह्वकेपत्रमित्फथ्यते॥वाणैवंकोष्टकागारमध्येयुक्त्यामाध्ममेधुष्वर्वादिकाष्टाःपृष्टयंत्रस्यायतेद्वेभुजाये
 श्शस्मेतवाह्विदमततर्जुजंवाअग्रेपश्चावम्यवात्रात्रिकोणेलघद्विदयंत्रानेनवेत्रेच्छिदंदिप्रीमरुकीलंदला
 लीविद्यावाष्टागारशुक्तोवातनजीतपुष्पदीयश्चतस्रोदिशाःमाध्मः।ततोयंत्रस्यपृष्टप्रदेशेआयताभुजातवाअग्रे
 द्वे श्शस्मेवतथास्यभुजस्यामध्येच्छिदंलवातस्यच्छिदस्याग्रेपश्चावमद्विदवउःकोणयत्रानेनवेत्रेच्छिदंभुजा

मध्यविवरेवमेरुमंजंकीलेवक्षिष्वातेनमेहरुकीलेनकोष्ठागारमहितापत्रालीविधात्रामरुकीलेघोरिम्
वक्राकाराकीलिकादोषा॥७॥नवाक्षिदंमूढमस्यत्रिकोणेतत्रक्षिष्वाकंठकंठश्चिकामांतस्यपातेमुद्रिका
कार्त्तमूत्रादयंयंत्रनिष्पत्तिरेव॥८॥अस्यव्याख्या॥अस्ययंत्रस्याकारोश्चक्ष्मंछिदंनवातत्रश्चिकामुखांतकंठकं
क्षिष्वातंत्पांतिमुद्रावदवामुद्रापातलविकीर्यंमूत्रादयंएवंयंत्रनिष्पत्तिर्ज्ञेया॥अनूभुगुपुरवरेगणकवक्रं
मणिलतीपतिमंश्रुतोमदनंमूरिगमाउरुः॥तदीयपदशालिनाविरचितेमुयंत्रागमेमहेंद्रयुक्तोदितंघटकमे
त्रस्ययत॥९॥अथश्रीपाराजमहीदमर्वगणकपेष्टोमहेंद्रयुक्तः॥मूरिवरमुदीयवरणांभोजैकभंग्यतामु
श्रीमलयेंडनाविरचितः॥स्मिन्यंत्रागमव्याख्यानेविशदेमुयंत्रघटनाध्मयोद्धितीयोगतः॥इतियंत्रागमेघट
ध्मयोद्धितीयः॥॥अथयंत्रवनाध्मयोव्याख्यायते॥७॥यंत्रप्रोक्तमद्विधंस्यानवत्याएकद्वितीयागपत्त्यंश
स्या॥द्वैधमेषतत्प्रमौम्ययाम्यप्रमेभदातन्मिश्रध्वमिश्रमूर्धपरंवा॥अस्यव्याख्या॥आनवतेरेकाद्वि
दशो॥१०॥नेतीशपरिकल्पनयायंत्रवद्विधंशोक्त॥चउमिरंशोर्नवातभजनात्नभवतीतिनोक्तंएतदेवमौम्यया

म्यप्रमेदाद्विधमस्याभिश्चवेमिश्चमंजंपरंपोक्तं॥७॥ वृत्तद्वयंकर्कटकेनष्टष्ट्यंत्रम्यनिर्मायवउर्द्विशोऽक्याः प्रा
ग्याम्यगकोष्टगताः ततश्चमृथाः खनंदयमितोन्नताशा॥८॥ रंयाख्या॥ पूर्वाक्तयुक्त्याघटयंत्रम्यकोष्टागारम्यपाश्चा
त्याविभागेकर्कटार्यिनलोहयंत्रेणवृत्तयमुपरितनमहदधमूनवलङ्घ्रिविधायपूर्वाद्याः श्वतमोदिशोरखाद्वयेनाक्या
तत्रपूर्वस्मिनवृत्तेपूर्वदक्षिणदिग्मध्यमाकेद्रामुखाकोष्टगतानवतिप्रमिताउन्नतांशाः दक्षितेरेकाद्यांकः मृथा
अथद्वितीयवृत्तम्यलेख्यमाकुः॥९॥ वृत्तेद्वितीयेलिखितोन्नतारेखाविलेख्याः प्रतिभागजातापक्षत्रयेपक्रमजाः
विभागाः शंकुप्रभागदितातथाज्या॥१०॥ व्याख्या॥ अधमूनवृत्तेउपरिमूनवृत्तलिखितानामुन्नतांशानामेकांनुमारेण
प्रतिभागजातारेखालिलेख्याततोदक्षिणपश्चिमांतरालेपक्रमभागलेख्याः तथापश्चिममौम्यांतरालेवृत्तमध्येमून
गुलकायालिखितवृत्तदधमूनुभयतः पश्चिममौम्यरेखालग्नद्वादशकोष्टकानुत्तवापश्चिमांतरांमध्ययावदे
कादिद्वादशपर्यंतानुद्वादशद्वादशांगुलानुविलेख्यतेषामधमूनुभयतः पश्चिमोत्तरेखामध्यममौम्यरेखाप्रति
भागजाताथंगुलाद्यारेखाविलिख्याततउत्तरेपूर्वांतरालकोष्टकेषुजीवांकाविलिख्यावउत्तरीभागनारेखाथ

38
38

केंद्रमंभुवार्थवकार्यकदावित्तयनेत्रां ऊह्यम्यापि क्वाया लिखितानामवतितदा क्वाया टीकायां दृष्ट्याः एवं यत्र स्य दृष्ट
भागसाधनामं पूर्णजाता अथ यत्र कोष्टकागारस्य पूर्वपक्षसाधनं ॥ ७ ॥ एवत्र येषां लिगते तते प्राम्दते किरीयांतरतो विलि
ख्याः अथानमोष्टानुस्वरमामिमं स्यात्तु इह रेखा मुदा पा मुदको विलिख्याः ॥ व्याख्या ॥ यत्र कोष्टकागारस्य पूर्व
भागेषां ल्यां कर्कटकाग्रेण दृष्टव्ये तते पतिप्रथमे नद्यास्वदृष्टे किरीटमध्यात्तृष्ट्या विकीर्षित एकाक्षनता शानु
मारेण कोष्टकाविधायव उद्दिष्टु नवतरं शानु इति तां किलेवपरितनम्य दृष्टम्यना डी दृष्टा तदधश्चित्तदि
तीये दृष्टे पल्ल्यानां साधनमाह ॥ ७ ॥ यत्रैक कर्कटकारेखा प्रतिकोष्टकं यथोचितं लिख्याः ॥ अथामोम्यं यत्रे इष्टाक्ष
पत्रेषु नतवेल्यानां साधनमाह ॥ यत्रेयमोम्ये विरचय कं बापत्रानुमानेन विलिख्य तत्राभागां नुस्वरामनुस्वयेतदं
त्रोः कर्कटिदृष्टव्ये तयंदलेषु ॥ अथमोम्ये ॥ मोम्ये यत्रे ॥ शोषत्राणि काष्टमयफलके लादया दृष्टमं निवेद्य पत्रानु
मानेनैकां कं बांधय तत्र विंशदशानुपरिकल्प्य अकं बाधुतिरे त्रोः कर्कटमाणेन १२५१ मे षनु लापमाणेन ११८३

श्री.
यत्रा

मकरप्रमाणेन च ३० यत्र मध्यमत्कर्कटयत्रेण दृष्टव्यमा लिखेत् ॥ ७ ॥ नूजास्वमायं भवती हृत्तंततः परां वो नतम उजा
नितां लिखेद नवते विभागां नुश्चानिना द्यनतता वगत्यै ॥ ७ ॥ व्याख्या ॥ एषु दृष्टेषु प्रथमे दृष्टं भूजाख्या शोषाफनतां
शानां हानि भवतीति शेषः एषु दृष्टेषु पूर्वोक्त एकद्व्यंशक ल्यनया आनवते विभागानुनातां शानु लिखेत् किमर्थं
इनस्य सूर्यम्यादि शङ्का त्रैषणं ग्रहाणां धिष्ण्यानामुन्नतं स्मृत् तता वगत्यै सूर्याक्षनतवाज्ञानाय त्वर्थः ॥ ७ ॥
मध्यमत्कर्कटममितोय कर्कटवृत्तिप्रागपरविभागे ॥ कमाद्विरेकापरमं दिनं वदशाभिधानेन तथा ह नागाना
व्याख्या ॥ मध्यमत्कर्कटममित उभयतः कर्कटवृत्तमध्यम्वृत्तेर्वपरविभागे कमादां विषुवद्व्यायां परमं दिनमुक्तदृष्टिदिनमा
नवदेशनाममहितान्तां शानु लिखेत् मुपयेदित्यर्थः ॥ अथामोम्यं यत्रे होराक्षपनमाह ॥ ७ ॥ ऊजादक्षे द्वादश
धा विभज्य मृगदिकर्कादिभम उलेषु ॥ विधाय दृष्टाश्रितः प्रतीत्या अं किर्निविश्या द्विदशापि होरा ॥ ७ ॥ व्याख्या
ऊजा उपरि द्योतिता तूर्वक्षिति नो बाधनी नमकरमेषकर्काक्षयमं उलेषु द्वादशाधा विभज्य मृगदिकर्कादिना

यंत्रगटी

१७३ अथ क्रमादेत एव स्फः कर्कसिंहकनीष्पिकाद्यादिषट्मानं म्यानुलादौ वेपरीत्यतः ॥ १३ ॥ अथ भवकेषां गुक्तदृक्का
र्मसंस्कृतनक्षत्राणां नामाह ॥ व्यासाख्ये हवे जमुखा निमति लज्जानिलकोदय जानियत्रारेखास्तु डूनां पतिभाग जाता मृत्रैव
कैद्राभिमुखालेख्याः ॥ १४ ॥ कैद्रा न्यतीपं विरव्य विरुंध ज्यापुमौलौ नवकर्कटेन तत्रैव धिस्स्यस्य यथोदितस्य
निवेश्य मास्या श्रमतीव भूत्सं ॥ १५ ॥ अनयोर्व्याख्या यंत्रा सह तै पूर्वत उत्तर म्यां निरक्षानि मेषादीनि लज्जानि मांशा
निलिखितानि संति ॥ तत्र ष्वरेखामनुलक्षीत्यनक्षत्राणामंत्राप्रमाणेन कैद्राभिमुखा विलिख्य कैद्रा न्यतीपं प्रो
म्य स्था होरात्रप्रमाणेन कर्कटाग्रेण विरुंध विरव्य तत्रैव विरुंध परि यथोदिष्टस्य धिस्स्यस्य नाम सहित स्याति ॥
श्रद्धाग्रमुखं मृत्वा धनुर्मृगांत विधेयं विरुंध शिखरं करस्य नाम्ना ॥ यज्ञाश्रमाणां गणकेन विधत्त मुकुमुकु
श्रुवतिना डिहत्तं ॥ १६ ॥ स्पष्टं ॥ एवं सोम्य यत्रैव भवक्रमाधना मं पूर्णा जाता ॥ ॥ ७ ॥ ॥ अथ केवलया म्यं
३५ दांशपत्रे हनत वलयमाधनमहायाम्यपि यत्रैव विधिरुक्ता एव बध्ना म्यहत्ते मृगकर्कसं जौदकुमाधनाष्ट

३७
३८
३९

विकमुन्नतांशानयाम्येवभागेविनिवेशयेता॥१७॥मध्यमसौम्येविरवयुकेन्द्रासाधमानेनऊजंविदध्याताआभाधकंद
दिएतमुन्नतश्चकेंद्राणि विमोचयुतानिऊर्यति॥१८॥व्याख्यायाम्येपियत्रेविधिर्वत्रमाधनादिःशुक्लएवायंविशेषः।
मृगकर्कटत्रेयात्याम्यभृगवृत्रमुनेककटत्रमितिनामाकर्कटत्रमुनेमृगवृत्रनामवत्रत्रादिकमाधनापूर्वमुन्नतांशं
नृदक्षिणस्यादिशानिवेशयेत्तन्नापयेदित्यर्थः। तथायत्रमध्यमउत्तरस्यादिशिप्रोक्तयाम्यकेंद्रमानेनकर्कटेनविक्रले
वीउक्तयाम्यव्यासाद्धमात्रेनऊजंविदधीताएवंमाध्यावकेंद्रव्यामैरुन्नतावृत्तानिप्रमाध्याततोमाध्याधिकवाह
दिएम्यामविमृगणिकेंद्राणिऊर्यति। केंद्रमानेर्वायमानिश्चोन्नतवलयानिप्रमाधयेदितिभावः। एककेंद्रवलय
म्ययंत्रेयत्तोत्रापत्रमाधनामपूर्णाजाता॥ ॥अथकेवलयाम्ययंत्रेभवकमाधनाभवकपत्रेपिचयाम्ययुक्त्या
ततेषुवृत्तेश्चकेंद्रविक्राताव्यासाख्यवृत्तेविहितोऊरभागेनिवेश्यानिपुरेवभानि॥१९॥व्याख्या। भवकपत्रेयास्या।
दोशोपत्रवृत्तककर्मकरवृत्तविपरीत्येनवृत्तेषुविहितेषुदिव्यमाधनापूर्वपत्रमध्यमउत्तरविभागेभवककेंद्रमा
नेना॥२०॥विहतेष्वीतउपरिवासाधवृत्ते॥२१॥२२॥विहितेपूर्वतोनिर्दिष्टाणिभानिमेवादीनि तथाभानिनदीनाणि

३६
श्री०
३७
३८
यंत्रराटी

पुरेवसौम्ययंत्रवयाम्यव्याहोरात्रमानेनएकटीलतमुखानिष्ठाथानिसौम्ययंत्रेसौम्यव्याहोरात्रयुक्तानिलिखं
तोअत्रवयाम्यव्याहोरात्रयुक्तानीतिभावः। अथमिश्रनेषुफणीद्वयंत्रेदोशोपत्रेउन्नतवलयमाधनमाहा॥तन्मिश्रने
देषुफणीद्वयंत्रेवृत्तयंत्रेसौम्यवदेवकार्यं। कार्कततःस्वामिलविर्विभज्यवृत्तत्रद्वयंयाम्यवदेवशेषं॥२०॥व्याख्या। तन्मि
श्रनेदेषुसौम्ययाम्यमकयंत्रेनेदेषुफणीद्वयंत्रेउन्नतांशपत्रेसौम्ययंत्रवृत्तत्रयंत्रमकरमेषककार्यकार्यं। ततःक
र्कटत्रमेवा॥२१॥ बुद्ध्यात्रिशदंत्रैर्विभज्ययाम्ययंत्रवृत्तशेषवृत्तद्वयंमेषमकराख्यंयाम्यमध्यकार्यंएतावतामध्यमक
मणवृत्तपंचकमकरमेखकर्ममेषमकराख्यंममुत्पन्नाकोभावः। सौम्यध्रुवात्कर्कट्यामन्नः। मध्येमेषः। बहिर्मक
रः। ततःसौम्ययंत्रकर्कटत्रमादौ तथायाम्यध्रुवान्मकरानिकटः। मेषोमध्यः। कर्कटोबहिः। ततोयाम्ययंत्रमकरवृ
त्तमादौतन्मेषम्यइतंदयात्मकमितितथैववृत्तरचनोक्ता॥ अथफणीद्वयंत्रेदोशोपत्रेउन्नतवलयमाधन
माहाकर्कटवृत्ताउपरिप्राध्यासौम्योक्तयुक्त्येनतमंउत्तानि। याम्यानिऊर्यतिदधः। श्रुतानिप्रपातशुद्धा
निहियाम्यभागे॥२०॥व्याख्या॥ अदोशोपत्रेपूर्ववदिकमाधनात्तवीयाम्यदिकभागेकर्कटवृत्ताउपरिमकरवृत्तप

र्येतांमोक्षद्वोनतमंडलानिप्रसाध्यककदिधोप्राप्तयंत्रद्वयधेमिलिताश्चनतमंडलानिकायाणि। ए
 षांकद्वयमादिप्रक्रियाप्रयत्ना। एवंफणीद्वयत्रेयत्तांमपत्रसाधनासंपूर्णा॥ ॥७॥ ॥अथफणीद्वयत्रे
 मंडलसाधनाप्रारम्भपत्रेस्यपंचदशमेखादिरवकंविनिवेश्यमोक्षोयाम्येवभागेविनिवेशनीयप्राकृपश्चि
 मांतेवउलादिषट्कं। २१अस्यव्याख्या। अस्यफणीद्वयमिश्रयंत्रस्यमपत्रेभवकपत्रेप्राग्दत्तोत्रापत्रवस
 यंचदशेखरचितद्वयवकेमोक्षयंत्रवन्मध्यम्यरेषोपरिवृद्धकेद्रात्रोत्रमोक्षदिशागेप्राकृपश्चिमरे
 खालगंथासदृशंविचरयत्तत्रमेखादिगशिषट्कंनिवेश्यवततोयाम्ययंत्रवन्मध्यम्यरेषोपरिलुब्धके
 द्रात्रोत्रोत्रमोक्षदिशागेपश्चिमपूर्वरेखालगंथासदृशंविचरयत्तलादिषट्कंनिवेशनीयं॥ ॥अथ
 म्मिन्नेवपत्रेभमंडलांशैर्नक्षत्रमुपनमाह॥मोक्षानिभानीहकुलीरबाह्येलेख्यानिमोक्षकगणोदित
 नि। याम्यानिचितानिउलीरध्वंशेषाणियाम्यद्विगुणोदितानि। २२व्याख्या। इहपूर्वोदितेफणीद्वयत्रभव
 कपत्रेमोक्षानिभानिमोक्षकगणोदितानिप्रोक्तमोक्षषट्कघोरात्रावितानिकर्कदृशाद्यैव्याम

39

श्री०

३९

यंत्ररायरी

कारंमोक्षयंत्रवद्वेखानि॥ ॥अथभवकपत्रस्यघटनशिक्षामाह। अथस्वतंत्रपरद्वणीयपत्रेभवकार्धमया
 म्यशेषाफणीद्वयत्रंगदितमयैतज्ज्ञेयानियत्राप्यखिलान्यपीठं॥ २३व्याख्या। भवकपत्रेशेषपत्रमयाम्यछिन्नरा
 शिनक्षत्रमुत्तिहेतोराधरद्वयपरिद्वणीयं। शेषस्यष्टं। एवंफणीद्वयत्रभवकपत्रसाधनासंपूर्णाजाता॥ ॥
 ॥७॥ ॥अथकिमपिषमुत्तंविशेषमुच्यते। केद्रयासेभ्यःयानिउन्नतबलयानिसंयादितानिसंति। तानिकेवल
 मोक्षकेवलयामेष्टिचसर्वमिश्रेवसर्वदायाम्यभागएवभावंति। तथाकेवलयास्ययंत्रादपिमोक्षयंत्रवत्
 घटिकादिकालनियमाः। दोदिष्टभूमाग्राणेषुसर्वदासोम्यद्विभागेउल्यमेवाति। परंयंत्रविहिलकाभि
 धनिरक्षुमात्तउत्तरक्षुवातिमुखेक्षुकेद्रयासेभ्यःसाधितमोक्षोनतवलयासोम्यनक्षत्रसहितैःमो।
 म्ययंत्रसाधनावके। याम्ययंत्रसाधनातथाविधनाकारिः॥ २४तत्रकोहउत्तः। ततोयाम्यकेद्रयासेद्वी।
 र्धतारेःसाधितयाम्योनतमंडलानिचराः॥ २५उर्ध्वतानि। एषुलघुमाग्राणां। बकुविस्ताराणि। अतएवमा।
 धिनुमशल्यानि। तस्मात्तद्विषयसंबंधीनिनक्षत्राण्यपि। २६कतराणि। निरुपयोगीनिवा। अतस्तेमृना

[illegible]

द्विष्ठाः ॥ २० ॥ ३६ वडुर्विशतिनिर्मिता लब्धं ॥ ११ ॥ ३७ अथाक्षात्पात्यते शेषं ॥ २० ॥ ३८ अद्वितं ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥

श्री.
यत्रायय

परिच्छिन्नतवलययावकैर्दंयासांतरं ३५६ केवाभागैः प्रमीयमाणं यदि स्यात्तदा तद्वलययं शुद्धं एवं शेषाण्यप्यथा
नतवलयानिशोधनानि। अथ सांशानां द्वादशालानां शोधनमाह॥ ३५७ द्यामौ दीव्याम्यरेखायेन दृशांशता। प्राक्
मम उर्यदि कूपरेखलानां तद्विशुद्धता॥ ३५८ अथ व्याख्या॥ ३५७ द्ये पूर्वोक्तिजेऽमेऽपरदिति जे उदीच्यरेखायेनाम्य
रेखायेन पथममममव उर्यदशमानां मेऽउलार्कैर्मकराणां मदृशांशता उच्यंशता यदि स्यात्तदा तेषां व उलार्क
लानां मेऽउलार्कैर्मकराणां मदृशांशता उच्यंशता यदि स्यात्तदा तेषां व उलार्क
यद्वक्रमं शुद्धमुपितननद्वंशात्परमो नतो नद्वंशव वंशुशोधनामाह। मध्यरेखापुते मध्यरेखायेन शोधनं
दि। भास्यन्धानपरमांशानुदातव वंशुता॥ ३५८ अथ व्याख्या॥ यद्यनरद्वंशयस्य वंशुन न्धानपरमांशानुपरमा
यस्य रेखायेन स्मिन् र्भागोऽस्मिन् र्भागो मध्यरेखापरमुते मति तस्य नद्वंशयस्य वंशुन न्धानपरमा
स्मिन् र्भागोऽस्मिन् र्भागो मध्यरेखापरमुते मति तस्य नद्वंशयस्य वंशुन न्धानपरमा
यदा शुद्धं रोहिणी नद्वंशमशुन स्य दतीये शो वर्तते। तस्मिन् र्भागो मध्यरेखापरमुते मति तस्य नद्वंशयस्य वंशुन न्धानपरमा

श्री.
यंत्रगदा

सम्यक् पूर्वहनि प्राक्कृत्तु नुजायस्य रवे रुन्नत भाग काः स्फः । त एव मध्यं दिन तो परांशां रात्रौ य हो दुध पि विव
मेवा रथ्या रव्या । पूर्वहनि पूर्वाह्नि प्राक्कृत्तु नुजायस्य एकाद्या न वाति पर्यं ता रवे रुन्नत भागाः स्फर्भ
वेयुः । त एव मध्यं दिन तो मध्यम द्वा इर्द्ध अपरो न ताः स्फः । तथा रात्रौ गण केन दक्षिण नेत्रां न मी ल्य वा मनेत्रो परिमुन यं
त्रेण उष्टस्य स्यष्टस्य ग्रह स्य धिस्त्रस्य वा वेधे नुजायस्य ष्ठ्यं शर्वा परदि जत न न पूर्वो न तां शाः । अपरो न तां शा
जेयाः । अथ रवि संवद्ध पूर्वपरो न तां शो भ्यादि न गत शेष धृत्का द्या न य नं ल ग्ना न य नं वा ह । रव्यं श कं प्राग परव नुजे
धृत्वो न तां शो परिगे ल ते स्मिन् । द्वि म्ना न सं ल ग्ना म्ग म्म मध्ये कालां श केः पंक्ति पल प्रमाणेः ॥ ३४ ॥ इति विभक्तैर्दिवस
स्य जातं शेषं वधद्यादि परिस्फुटं स्यात् । तथो न तां शस्य शिभा स्करां शेषा क भूज भाक्या य न ल ग्ना भागाः ॥ ३५ ॥ अनयो र्वा
रव्या । उष्टदिने सा य न मे रवादि राशि मुतं पूर्यां शं शर्वाह्नि पा विभूजे परा क्रेः मुनुजे । वध्वा स्मिन्नेव पूर्यां शो क मा द्वि
द्वर्षा परो न तां परा ग ल ते सति क मा द्वि म्ना न सं ल ग्ना म्ग म्म मध्ये मुतिः कालां श केर्दश पल प्रमाणेः षड्विभ
भक्तैर्दिन स्यात् । तं शेषं वधद्यादि परिस्फुटं स्यात् । तथा शर्वा क एव भा स्करां श विद्ध पूर्वपरो न तां शस्य शिपूर्वादि
तिज ग तः । सायानो मे षादि ल ग्नां शः स्यष्टः स्यात् । अथ दिवा हो रा न य नं ॥ ३६ ॥ एवं रवेः सप्त म राशि भागे य नैव हो रा

वलयेमुमेमेवाहोराधनाथवततस्यषष्ठस्यगणपरनूजवृत्तातापाआस्यव्याख्याएवमितिकोर्धःपूर्व
 वहास्करांशोदृष्टानतांशोपरिमुपितमतितस्मात्तमराश्यायस्मिन्नुहोरावलयेमुमेवदिनेआद्यादिनवारा
 होराततोदिनवारहोरातषष्ठषष्ठस्याद्वितीयाद्यादशायमेताहोरात्रेयाःपरमियहोराअपरभूजवृत्तादृष्ट्या
 अथदिनगतशेषघटीभ्योर्यनेताज्ञानयनं॥७॥३॥अथशकषाकशितितिजनिवेश्यविहंगस्यविरव्यपश्चात्
 अमीष्टकालेघटिकोपरिमुतदेवलेवापरिवितनीयारयंशकोयत्रहिउगृहेतदकंसंख्यामुपनोन्नताशाःमा
 ध्मकृतोमुशितितिजातयेवतेबोधनीयाःसुधिक्षिप्तेयाःशिक्षः॥१०॥अनयोद्यस्विरयंशकाशितितिजनिवेश्यवि
 हंगविरव्यपश्चादमीष्टकालेघटिकोपरिमुतदेवमगास्येवाग - तद्विलोकनीयांयस्मिन्मुगृहेतदयं
 शःमुतोमुतावदकप्रमाणाःपूर्वतःसूयोन्नताशामुवतीषुघटीमुभवतीतिशेषः॥तथामध्यकृतोऽमुशि
 तितिजातयेवपूर्वोक्तरीत्यामुधियाविडोअवशिष्टासुधघटीमुअवशिष्टोन्नतांशाबोधनीयाः॥अथरा
 जोनक्षत्रविदोन्नतांशोभ्योरात्रिगतशेषघटिकानयनंविदोन्नतांशोपगतयभास्येरयंशकेमेदऊजमुतेव

श्री०
 ४६
 यत्ररा

विक्रद्धयांतर्गतशेषनाडीलादिपूर्वापररात्रिभागो॥७॥अस्यव्याख्यारात्रोभुजायेणदृष्टेनक्षत्रेविधेयाद्याः
 तीथ्यावायेउन्नतांशाःशायंतेतेषून्नतवलयेमुतबुविदोन्नतांशेषुविद्वनक्षत्रमुखेष्टेसूर्याशोऽमुऊजमुएंदऊ
 नमुवपूर्वापररात्रिभागेकमात्मकरमुखविक्रद्धयातगतंशेष्वनाडिपलादिस्फुटस्याताअथरात्रोलग्नहोरान
 यनमाह॥७॥तत्रैवतद्वत्रमुखेनिविष्टेप्राभूजगमायनमेतलग्नंसूर्याशकाधिशितद्वत्रसंभ्रातदावहोरायिनि
 शिस्फुटासाताद्व्याख्यातत्रैवविदोन्नतांशेष्वेवविद्वनक्षत्रमुखेनिविष्टेपूर्वरात्रिपररात्रेवप्राभूजगमायनं
 लग्नमिति॥तथातदातस्मिन्ध्वनकालेसूर्याशकाधिशितद्वत्रसंभ्राहोरानिशात्रात्रोस्फुटासातालग्नकालेया
 म्मिन्ध्वचलयेसूर्याशःमुतोमुतेनक्षत्रहताहोराभवतीत्यर्थः॥अथरात्रिगतशेषघटीभ्योनक्षत्राकांतांता
 शानयनंसूर्याशकेमुशितितिजमुतेकतवामगस्यगतनाडिकासुनिवेशितेवोन्नतद्वत्रगाःस्याःप्राथ
 यतीथ्योउन्नतांशाः॥१०॥व्याख्यासूर्याशकेऽमुशितितिजमुतमतिसगस्येअंकलेवापश्चादृतेष्टनाडिका
 मुअत्रमगास्येनिवेशितेसत्फनतांष्टमुताध्वकीयाःप्रथपतीथ्योउन्नतापूर्वापरकपालमुतनक्षत्राको

४३

वलये मुमैमैवाहोराकनाथवततस्वषष्ठषष्ठस्यगण्यपरभूजवतातापाआस्यव्याख्याएवमितिकोर्थापूर्व
 वहीकरांशोद्वेनतांशोपरिमुपितमतितास्माअनमरास्यशोयस्मिन्होरावलयामुमैवदिनेआद्यादिनवार
 होराततोदिनवारहोरातषष्ठषष्ठस्याद्वितीयाद्याद्वदशपर्यंतहोरात्रेयाःपरमियहोराअपरभूजवताद्वितीया
 अथदिनगतशेषघटीभ्यारकनेताज्ञानयनं॥७॥इयंशकषाकक्षितिजनिवेश्यविहंगस्यविरवयपश्चात्
 अमीष्टकालेघटिकोपरिमुतदेवसेवापरिवितनीयारयंशकोयवहिउगद्वेतेतदकंसंख्यामुपनोन्नताशाःमा
 ध्मकृतोमुक्षितिजातथैवतेबोधनीयाःसुधिसंनयेयाःशिक्षाः॥७॥अनयोयस्मिन्व्यारयंशकोक्षितिजनिवेश्यवि
 हंगविरवयपश्चादमीष्टकालेघटिकोपरिमुतदेवमगास्येतेवाग - तद्विलोकनीयायस्मिन्मुगद्वेतरया
 शःमुतोमुतावदकप्रमीणाःपूर्वतःसूयोनताशामुवतीषुघटीषुनवतीतिशेषः॥तथामध्यमकृतोऽमुक्षि
 तिजातथैवपूर्वोक्तरात्यामुधियाविडोअवशिष्टास्मिन्घटीषुअवशिष्टेनतांशाबोधनीयाः॥अथग
 नोनक्षत्रविद्वेनतांशोभोराविगतशेषघटिकानयनंविद्वेनतांशोपगतेयमास्येयंशकेमेदऊजमुतेव।

श्री०

४३

यत्रराटी

विहंगद्वयांतर्गतशेषनाडीलादिपूर्वापररात्रिभागो॥७॥अस्यव्याख्यारात्रोभुजायेणद्वेनक्षत्रेविद्वेप्राच्याःपी
 तीयावायेउन्नतांशाःप्राप्येतातेषून्नतवलयमुतबुविद्वेनतांशोषुविद्वनक्षत्रमुखेद्वेतेसूर्याशोऽमुऊजमुएंदऊ
 नमुवपूर्वापररात्रिभागेकमात्मकरमुखविहंगद्वयातगतशेषेनोडियलादिस्फुटस्याताअथरात्रौलभहोरान
 यनमाह॥७॥तत्रैवक्षत्रमुखेनिविष्टासूजगमायनमेतलगांमूर्याशकाधिष्ठितक्षत्रसंमुतादावहोरायनि
 शिस्फुटमाताद्व्याख्यातत्रैवविद्वेनतांशेषेवविद्वनक्षत्रमुखेनिविष्टेपूर्वरात्रेऽपररात्रेवप्रासूजगमायनं
 लग्नमिति॥तथातदातस्मिन्क्षत्रकालेसूर्याशकाधिष्ठितक्षत्रसंमुताहोरानिश्चारात्रौस्फुटस्यातालभकालेया
 स्मिन्क्षत्रलयेसूर्याशःमुतोमुतेनक्षत्रहताहोराभवतीत्यर्थः॥अथरात्रिगतेष्वघटीभ्योनक्षत्राकांतांतांता
 शानयनं॥सूर्याशकेमुक्षितिजमुतेकक्षत्रामगास्यगतनाडिकांननिवेशितेनोन्नतक्षत्रगाःस्याःप्राच्य
 पतीत्योउन्नतांशाः॥१०॥व्याख्या॥सूर्याशकेऽमुक्षितिजमुतमतिमगास्येअंक्षत्रवापश्चाद्वेननाडिका
 मुअत्रमगास्येनिवेशितेनक्षत्रेनतांक्षत्रमुताध्वकीयाःअथपतीत्योउन्नतापूर्वापरकपालमुतेनक्षत्राकां।

ताउन्नताशाः स्फुरामवतीतिशेषः अथदिनरात्रिगतघटीभ्यो लभानयनामाहा प्रागमुनूजोयगतेर्कनागेकिते मृगा
 स्थगतनाडिका मुष्टितेवतस्मिन्कनिशोः कमात्स्यात्प्रागुजगः मायनलभभागः ॥११॥ व्याख्या ॥ दिवसे मूर्योशेषाकृपा
 दितिजोयगते मृगास्थविहितेतोगतनाडिकामुतस्मिन्मृगास्थमुतेमतिषाकृदितिजमुतः मायनो लभभागः स्या
 त। एवंरात्रावमृदितिजमुतेमूर्योशेषमृगास्थविद्वयिवाततोरात्रिगतघटीषु मृगास्थेऽप्यारापिते प्राकृदितिज
 गतमायनो लभभागो भवति। अथ द्वादशभावमाधनेभाववउष्टयमाधना ॥७॥ पूर्वा मृजोवरदक्षिणमुपाकुम
 धउर्यावरलभभागः ॥ लभमेवेकेद्वउष्टमिष्टयत्रमुतास्फर्बलिनो ग्रहेन्द्राः ॥१२॥ व्याख्या ॥ इष्टेताकालिके लभे पूर्वा
 पूजा मृजोवरदक्षिणमुसमकालं संभवतः प्राकुमधउर्यावरलभभागः प्रथममधउर्यदृशमलमांशः के
 द्वउष्टमवेत। यत्र केद्वउष्टमुताग्रहेन्द्रा बलिनः स्फर्भवयुरिति। पुनर्भाववउष्टयोत्पदनमाह ॥७॥ अंकेरा
 होरायुजिलभभागेखमध्यगौ निधनधर्मभावो ॥ द्विउर्यहोरास्यशिमममांशेखमध्यगावेवशिवार्कसंख्यो ॥१३॥
 अस्य व्याख्या ॥ लभभागे ताकालिकलमांशोऽको लश ॥ होरायुजिनवमेकादशहोरावलयास्यधाभागमुसति

४२
 श्री.
 यत्रराटी

खमध्यगौयाम्यरेसोपरिगतौ कमानैधनधर्मभावोऽपुः ॥ तथा मममांशः मुष्टितमममालमांशो द्वितीयवउष्टहोराप्रात
 रेखास्यशिमपूर्ववसमध्यगावेवकादशभावो भवतः ॥ अथ मृजोषभाववउष्टयोत्पदनमाह ॥७॥ व्याख्या ॥ दिवसे मूर्योशेषाकृपा
 युक्त्यानिजानिजासमममममास्थः ॥ संयोज्यभावद्वितयममीपामुतेतद्विहितं वमधिः ॥१४॥ व्याख्या ॥ अष्टमनव
 मिकादशभावसरात्रियुक्त्योराशिमृदु संयुक्तानिजानिजावात्सममममाः स्फर्भवयुः ॥ यथाष्टमनवमेकादशभा
 वानोराशिमृदुयोजनाद्वादशकपातनात्रुशेषाद्वितीयरतीयपवमषष्टभावाभवेयुः ॥ श्लेषमिश्रं वफलं ग्रहेन्द्रः समांश
 कोय छेतिभावमध्योः ॥ हीनाधिको वाकथितः संसंधेरतीतवस्थोत्फलसंप्रदायः ॥१५॥ व्याख्या ॥ भावसंधेः समांश
 कमुग्रहेन्द्रः श्लेषमिश्रं फलंददाति। तथा मएवग्रहेन्द्रः संघेहीनांशकः सन्नतीतभावस्यफलदायी। मंधेरधिका
 शकश्चागामिभावस्यफलदायी भवति। अथ खेटस्य फलसमी मंधेरधिका सकश्चागामिभावधेः सकाशा
 न्यूनाधिकस्य विशेषकाद्यफलानां यनमाह ॥७॥ न्यूनाधिकवेविधिरषकार्षः खेटाशमध्यंतरपातशेषे। हवान
 रिवर्भावजसंधिजाशांतरणभक्तेयत् ॥१६॥ तस्याद्विधभावफलग्रहस्य प्रहीयमाणं परिवर्द्धमानं इदंतदायकति

वयहेशोयदाभवेकालजद्वगश्चा॥१७॥अनयोयारिमाअत्रोदाहणाइष्टदिनेमध्यमक्रमेयंवेणमध्यमक्रमेयंनतांशः
 प्राप्ताः।तत्रमध्यमक्रमेखोपरिविक्रमेतेतदनुभवकेभ्याम्यमाणेतेउपरिमेषराशेर्द्धदशांशः।मायनोलमः।अताजा
 तामष्टदिनेरविमेषराशेर्द्धदशभागमायनोवर्त्तते।अयनांशोर्वहीनान्निरयनोभवति।मध्येःमकाशात्प्रहस्य
 न्यूनाधिकवैषाविधिः।कार्यः।कोऽर्थः।खेयंशंमध्यतरयाःपातेनतेयछेपंततनखिविंशत्याहवाहभावयहात
 रणभक्तेयत्फलंलभ्यते।तदुहस्यद्विधाहीयमानवर्द्धमानतेदाकावफलंभवत्।इदंफलंयहेशमुदायच्छाताम
 कालवक्रगोभवति।अथयत्रोषधिमकाशरेखोपगतमध्यमुरयशज्ञानमाह॥आद्यंतररेखरमभागाजातेष्टव
 ऊजेषाविमृगंकितेदिः।अंशान्द्विविक्तांतरजातनुविभज्यषड्विर्विलक्ष्याश्चउंशनीयाः॥१८॥ततोक्त
 कनताशकैषुष्ट्यामृगाम्यनिहितेऽनुघमं।पाथेऊजसूर्यबलःस्फुटंस्याच्छेषेषुखेरेष्टापिबेळमेवा॥१९॥अ
 योयारिमा।यंत्रममउलेखभागाजातेषडंशामतेआद्यंतररेखाविऊजेष्वामृगाम्येष्टानद्वयष्टेविन्दय
 नवीतरभागांशान्षड्विर्विभज्यलब्धांशःषड्गुणकार्यः।ततःप्राप्ततागंन्मेषविक्तात्ष्ट्यानेषुषड्वि



मृगाननेऽनुघमंनिवेशितेसतिप्रऊजसोरोलवःस्फुटोभवति।इयमन्येषपिखेटेषुवितनीयांअथअथ
 षड्विभक्तोन्नतद्वत्रमध्यगतोन्नताशमृगानमानर्थमाह॥२०॥षड्गुनतांशेषुमुखेत्थातरयंशमध्यममृगंकितेदिः।ष
 ड्विर्विक्ताष्टुलवानविभज्यषुभागेषुजातेषुषोढा॥२०॥पूर्वोक्तरीत्यांशेष्टेष्टगाम्येष्टफलंनतांशरविभागयोग्यं।मृ
 नभवत्फलंनताभागकानामेवंविधेयानिश्चान्यमानां॥२१॥अनयोयारिमा।अद्याशपत्रेषड्गुनतांशेष्वारावतेवमृ
 योशनिवेश्यमृगाम्येष्टानद्वयेपिविक्रितेसतितदंतःमृगानंशान्षड्विर्विभज्यलब्धांशेषुषोढामृगाम्येष्टेषुषागुत्ररा
 त्यामृगमुखेष्टेषुष्टापितेष्टफलंनतांशरव्ययोग्यमुन्नतांशानामृगानभवति।एवमन्येषामपिमुन्नताशाःसमानेयाः
 कोर्थः।यथाः।मथारथेसतउन्नतांशज्ञानमुक्तंतथानक्षत्रवचुतमुन्नतांशज्ञानमुक्तं।अथरात्र्यामिवउष्ट
 यलमनदीनोन्नतांशज्ञानमाह।रतीयहोरातगतेऽर्कभागयामेष्टिमेष्टाकुजगंवलगायत्रौभवेउन्नतद्वत्रम
 धेष्टिष्टायमाश्वानतभागकाश्चाएवंषकातिमहोरिकासुन्येष्टेऽर्कभागअतिशेषयामाः।जमानिवेष्टमक
 धिष्ट्यान्नतभागकाश्चनिवेवनीयागणकैःषुबुद्ध्या॥२३॥अथरात्रावष्टऊजसोऽर्कभागनिवेश्यमकरमुखे।

चिह्नं न वाऽन्यत्र होरावलयाणां मध्ये तृतीयहोरायां तेऽर्कभागोऽपि ते पुनर्मृगास्ये विक्रिते तद्वयां ते द्वयां केका
 लवृत्तेष्वटीपलात्मकः पथमयामो भवति तथैव समकालप्राकृजे लग्नभागश्च स्यात् ॥ ३३ ॥ अनतावलयमध्ये धिक्स्व
 चीगता उन्नतभागोऽपि स्यात् ॥ एवं षष्ठ्यनवमदशहोरायां ते रथशोको मणश्चापिते शेषयामत्रयं लग्नान्नद्वत्रि
 णामुन्नतभागश्च गणकैः श्रुधिया विचार्यः अथ रवि स्थष्टीकरणमाह ॥ मध्यादिनां शास्त्रे न स्य धवे द्वाते मध्ये
 खोपरियाः ॥ सम्यक् कुरुते मुतभाशको यः स मायना कर्मसदा स्फुटः स्यात् ॥ २४ ॥ अथ व्याख्या ॥ रविर्मध्यमं स्रुमं बंधि
 न उन्नतां शास्त्रेण विद्वान्मध्यमं कुरे खोपरितत्पमितो न तांशेषु विक्रिते ते भके वधाम्यमाणे यो राशिभागस्तत्र
 मि विज्ञाति तस्मिन् दिने तदंशः सायना कर्मस्य स्फुटो भवति ॥ अथ धिक्स्थष्टी शेषयहाणां स्थष्टीकरणमाह ॥ २५ ॥
 रात्रौ स्वमध्यमुत्तमग्रहाणां परो न तांशयधविक्रिता ॥ मध्यमुरे खोपरिमांशकाये तत्र स्फुता मुने खिला
 स्फुटा स्यः ॥ २५ ॥ व्याख्या ॥ रात्रि समये आकाशमध्यमुत्तमग्रहाणां परो न तांशानुयं नेण विद्वान् उन्नतव
 लयेतानुप्रमितो न तांशेषु मध्यरेखोपरि विक्रिते पुनवके भामिते पुनद्वत्रववोऽपि ते न द्वांशांशम्यशेषो

शो.
 यत्र राशि

पिते यहांशाः स्फुटयज्वंति अत्रोदाहरणं स्थष्टी नंतरं विवृत्तयेयां अथ प्रकारांतरेणैककालेन क्षत्रजो न ता
 शोभ्यो भौमादियं वकं स्थष्टीकरणं रात्रवनाष्टग्रहक्षेत्रयोश्च ज्ञात्वा न तांशान्निजमागमं भूमास्ये ग्रहाणां
 नैतभागभांशः स्फुटो भवेन्न स्यते दाखगम्य ॥ २६ ॥ व्याख्या ॥ रज्यामिष्टग्रहस्येष्टनक्षत्रस्य वोनतांशात् स्त्रीवा
 मुखे निजे कदशेषु स्फुटपिते न तिलबुधुर्वापरकपालमिष्टग्रहो न तांशेषु यो राशिभाग उपविशति तत्र ग्रह
 सायनः स्फुटो भवति ॥ अत्रोदाहरणं मं वत् ॥ ७१४३५ प्रथमस्येष्टशुक्रश्च गुरोरात्रिगतवटी ६५ ल १० ममये विज्ञा
 नद्वत्रेऽपरो न तांशाः ॥ १५५ त कालमपरकपाले भौमो न तांशाः ३० एवं विज्ञानक्षत्रवके लग्नो न तांशानामुप
 रि न्यसे विज्ञा उन्नतांशानामुपरि मिह लग्नस्य दशमोऽंशो लग्नः ॥ ततो ज्ञातं भौमः सिंह राशौ दशमो ७१० ॥
 सायनो वर्तते ॥ अथ न विहीनः ३१२६ ॥ ॥ कर्कटे भवति एव सर्वे ग्रहाः समानीयते ॥ ७॥ ॥ अथ ग्रहमुक्त्या
 नयनं ॥ प्रसाध्यते कालपुरो मते वेत् स्फुटो ग्रह मुहूर्तदंतरं यत् ॥ ७॥ ॥ इह तं तद्वदलोहता घटिक्संश्रुतं तस्य
 गतिः कलाद्याः ॥ २० ॥ व्याख्या ॥ मतेऽर्ककाले युगेऽर्कप्रहरांते व उर्थप्रहरादौ वयदि ग्रहस्येष्टतानीयते तदा

तदंतरं यदस्मिन् तृषड्विह्वलदलनोदृश्यतदा घटशुभं कुर्यात् एवं च ते तस्य ग्रहस्य कलाद्यागतिः स्या
तीत्यत्रोदाहरणं भवति १४३५ ज्येष्ठशुदि १५ गुरोराश्या न तारवेः ४२ दिनघटोत्पल २६ समये स्फुटोर्कः सायेन ४
॥ २० ॥ ३॥ ५॥ अपरोक्षतारोः स्वरेः ४२ रविः ४२ दिनशेषवटी ८५ ल २६ समये स्फुटोर्कः सायनः २० ॥ ४५ ॥
इष्टकालाकारांतरं ० ० १४ १० ॥ रसेः ६ संशुभयेत् जात ॥ ८५ ॥ ४८ ॥ इदं दिनमास्य ३३ ४५ ॥ अर्द्धनभक्तं ॥ १५ ॥
॥ ५२ ॥ ततो लब्धं कलादिफलं ५५ ० ॥ दशगुणं कुर्यात् एवं च ते तारवेः स्फुटगतिकला ५८ वि २० ॥ एवं सर्वत्राथा
नेतया अथ इष्टाक्षेपरमवरदलाहने तस्य लक्ष्मिषड्विज्ञानाद्यः ॥ नयनादेनिरक्षयज्ञातो स्फुटतेषमादा
भूजातमः ॥ शुभतवराक्षयज्ञातो स्फुटतेषमादा ॥ नयनादेनिरक्षयज्ञातो स्फुटतेषमादा ॥
दोत्तरो वजे सत्रवराक्षयज्ञातो स्फुटतेषमादा ॥ एवं कुंज्याम्यदिशेत गम्यान् गदिनक्षत्रपरं वराक्षयज्ञातो स्फुटतेषमादा ॥
नयः श्रेदिनां षड्विधप्रमाणानि शापितावत्प्रमितितभूजाता सोम्यंदजादवर्णिता च याम्याम्
वीर्या सुमुगमा ॥ अथ दिनरात्रिमाननयना सूर्याशंकशाक्षितिजे परे वा मुक्ता ततो मार्गमुखे किते ॥

द्विः आद्यंत विज्ञातगतं दिनस्या ॥ छेषात्तमिश्वाधटिकाः समन्ताः ॥ २० ॥ सूर्याशया कक्षितिजे अपरक्षिति
जे वमुक्ता मृगमुखो मृगद्वयं यापिते तत्र द्विद्वयव विहिते क्षेपपर विज्ञातगतं को लवृत्ते दिप्रमाणं घटाय
भात्मकं भवति तथैवाधः श्रुतां शेषरात्रिमानस्य घटिका दं स्यात् ॥ अथायनामानयना यवेदमध्यमे नैत भाग केभ्यो
देशे निजयोऽमुपरि स्फुटोर्कः ॥ सिद्धांतयुक्त्यापि वसाधितोयः तद्विप्रयोग नयनां शकास्यः ॥ ३० ॥ वीर्या ॥ इष्टाद
नेयत्रणमध्यमे नैत शोभोऽर्कस्य टी लते सिद्धांतयुक्त्यापि स्फुटी लते उभयोर्दंतरं भागाद्यंत देवतत्रदेशे
यनाशका भवति ॥ अथ ग्रहयुत्या नयनां शीघ्रस्य मंदस्य वरेवरस्य लब्धो नताशांतरमेकगत्योः ॥ गत्यंतरेणाग्रहरेतयो
स्वविभिन्नगत्योर्गतियोगकेन ॥ १ ॥ लब्धफलं वा सरनाडिकाद्यां मंदाकने स्यादधिकशकस्य ॥ शीघ्रस्याहीनाशु जुष
श्च गम्ययुतिदोषाश्च नयोः भवतवा ॥ २ ॥ शीघ्रग्रहस्य मंदग्रहस्य वानेतां शान्तां गृहीत्वा तद्विधाय एकगत्योर्वक्तव
कयार्ग्यंतरेण तदंतरं विभिन्नगत्योश्च गतियोगेन हरेत् ॥ ३ ॥ लब्धफलं दिनाद्यं भवति ॥ इदमेव मंदग्र
हात् शीघ्रग्रहेऽधिकं शकं सति गते शीघ्रग्रहे हीनाशके सति गम्यवफलं वेदितया ॥ अनयोर्मंदशीघ्रयो ग्रहयो
युतिकालः ॥ भवत ॥ अत्रोदाहरणं भवति १४३५ ज्येष्ठशुदि १५ भौमसायनः स्फुटो गुरुः ॥ ० ॥ २० ॥ ५५ ॥ भुक्ति ॥ ११ ॥ १ ॥ शु

दत्तवंचुष्टवाविलोकनीयायादितकर्ममेषांतरमुंस्यात्रदातम्यनक्षत्रम्यसौम्याउत्तराकांतिः। इदमेव नक्षत्रमुखं य
 दिमेषमकरांतरंगम्यात्रदातम्यनक्षत्रम्यदक्षिणकांतिः। स्यादिति। अथयंत्रादितादांशेभ्यश्च द्वांशानां लक्षणं यनो
 यंत्रादितादांशगणदमीष्टादांशोर्विलग्नम्यावधिब्रवीमि। लग्नं वतत्रोन्नतमागकेभ्यः प्रागुत्तरतः कांतिरियं वपुण्णः।
 २० अक्षांशायारंतरकेनभकापरोपामनाधर्मितोलवादिमृगानां त्वाकुपुरतः प्रदेयं सोम्यापमेयं वभवाक्षमागताश्च
 २१ अक्षाधिकेभीष्टफलांशकेतदिष्टाक्षजं प्राकजं विलग्नं याम्यापमेयं ययतः सममृमिदं विवायं गणकोत्तमेन २२ अक्षि
 निर्विशेषाएषां व्याख्यायंत्रादितादांशगणदमीष्टादांशोर्विलग्नमायातितथा क्वीमिकययामितत्रलग्नं प्रागुत्तर
 नतांशेभ्यः समानीयमृगानने विद्वं लवाभ्यां ततो लग्नतामोम्याम्यकांत्यानयनं। इयं कांतिरक्षांशो रंतरकेन गुण्य
 कोऽर्थः। यत्र समानीतलग्नममेमृगस्य लग्नं भवति। तच्चिह्नं तृष्टो अथ तत्र यंत्रादितादांशानां लक्षणं द्वांशानां
 अंतरेण ह्याततः परापामनपरमकात्याभाज्यावाततः प्राचमं आदिफलं मृगानां तात्प्राकुपुरतश्च देयं कोऽर्थः। य
 त्रप्रागानीतलग्नममेमृगस्य लग्नं भवति। तच्चिह्नं तृष्टो अथ तत्र यंत्रादितादांशानां लक्षणं द्वांशानां

श्री.

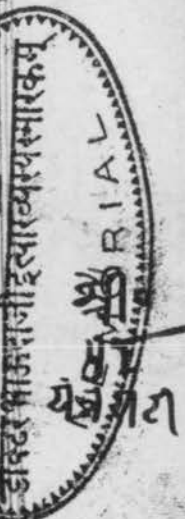
४८

यत्र राधे

तिगम्योऽप्यतीते गतेन जेन दत्तवंचुष्टवाविलोकनीयायादितकर्ममेषांतरमुंस्यात्रदातम्यनक्षत्रम्यसौम्याउत्तराकांतिः। इदमेव नक्षत्रमुखं य
 दिनादिकं भवति अथयोगः। योगजेवायोगस्य तेगम्येष्ट्याहते सूर्यशशांयोगेन रामाहते नभके लब्धं।
 दिनाद्ययोगस्य गते भवति। एतद्दिनाद्यफलमोदके ग्रहेष्टमेवा अर्द्धरात्रिके उग्रहेमिष्टममृकृतं कार्यं।
 गतविशोधयामि आहम्यमिष्टेनियोजयेदित्यादिनामृकृतं कार्यमित्यर्थः। अथतिथ्यानयने उदाहरणं। स
 वेत् १४२२ वर्षे वेत्वाद - भौमेयात्रणमृकृतो रवि वंद्यो अर्द्धरात्रि समये साधितो। तत्र नरयनोर्कः ॥ १११५५
 १४४३। मुक्तिपक्ष २१। वंद्य ११२२५। मुक्ति ८३१। इतरथं शो निरक्षमूजोपरिधृते मति। मकराननं काल
 एते मध्यरेखातः सृष्ट्या वउश्चवारिशदधिकशतत्रयां शषुत्रप ०२५। लग्नं। एव रथं शा २४४। ४३। वंद्यो
 भ्यः ३५०२५ पातिता जातमंतरां ५४३ एतद्दृष्टानिर्मकं लब्धं तिथिमुनिश्चन्या। एतावता अमावास्या ति
 थिः। शेषां ५४३। अत्र गतं नभ्यो जनागतं पृष्ट्या संगुण्य जातं ३४३। रवि वंद्युत्तरांश ००१। ४५। म
 कं लब्धं दिनादिफलं ०२५। ४०। एतद्दनवशात् तदिनामिष्टात् ४४। ५०। विशोधय जातं वित्री अमावास्या

४८

प्रमाणं घ० १८० पूर्वमर्वाथा नेतयं अथ नक्षत्रानयने उदाहरणं तिथ्या नयने पूर्वयेव द्वात्रा ३५० २६
 आनीताः संतीति त्रिगुणीता जाता १०५११८ एते ववारिशाता ४० विभक्त्या लब्धमश्विन्यादीनगतनक्षत्रा
 णि २६ शेषं अश्विन्यादीनगतनक्षत्रा ११११८ एते ववारिशाता ४० विभक्त्या लब्धमश्विन्यादीनगतनक्षत्रा
 फलां ० १६ १८ एतत्तवशात्तद्दिनमिश्रात् ४४ ५८ विभक्त्या जातं वित्री अमावास्यायां उत्तराश्रद
 नक्षत्रां घ० २८ ५३ प्रमाणं प्राप्ता एव सर्वत्र अथ योगानयने उदा० पूर्वनीतारव्यं ३४ ४४ ३५ संज्ञा
 ३५० २६ उभयोर्योगाद्दृष्ट्या अत्र वक्राधिकत्वात् वक्रान् अपास्य शेषं ३४ ४४ ३५ एतत्त्रिगुणीता
 १०५११८ ववारिशाता ४० विभक्ताः प्राप्ता विभक्त्या भादयोगतयोगा २५ अश्विन्यादीनगतनक्षत्रा
 ३२० एतत्त्रिगुणीतं ३६ कर्क मुक्तियोगेन २६ ७१ २१ मज्ज्यता लब्धदिनादिकं फलं ० ७ २० तत्तवशात्तद्दिनमिश्रात्
 दिनमिश्रात् ४४ ५८ मध्यमात् अपास्य जातं वित्री अमावास्यायां ब्रह्मनामयोगा घ० ३५ ० २८ वक्तुं
 एवं सर्वत्र अथ तद्दिने सूर्यमिच्छांते वित्री अमावास्या घटिका १० फलत्रया उत्तराश्रदपदा नक्षत्रं घ



दृष्टत्वात्रोत्तराश्रदपदा नक्षत्रं घटिका १० फलत्रया उत्तराश्रदपदा नक्षत्रं घ
 वतीति गणकोत्रमेन ज्योतिर्विज्ञानविचार्य अश्विन्यादीनगतनक्षत्रा २८ ३० इष्टा द्वात्रा २४ ० अत्र सूर्यो नक्ष
 शाः प्राच्या ६६ एभ्यो लग्नमाधिता वषादो सूर्यमति ११० कर्कलग्ना ३२ १० प्राक्कुजे निविष्टं मकरमुखे विरुक्तं
 अस्माकं तिरुत्तरा १२ १५ ५४ अंशात्मिका २० १५ ५४ एषा यंत्रा दृष्टा द्यौः शयो विद्यागना ४ ३० हता ज्ञात
 १८ ११ ५४ यत्र कामला २३ ३५ मक्ता लब्धमंशादिकं फलं ३ ४८ यत्र प्राक्कुलमानयनममये मकराननमुपविष्ट
 मस्मिन् तस्माच्चिह्नादिदं फलं यंत्रमुता द्वात्रा २८ ३० इष्टा द्यौः शयो प्राक्कुलमानयनममये मकराननमुपविष्ट
 जे कर्कलग्नमायनं लग्ना ३ १८ ० एवमन्यत्रापि समानेयं अथ मदादित नक्षत्रेभ्यो भाष्टदेशा म्वा द्वात्रा २४ ०
 मदादितर्दंतलग्ना ३ १८ ० मदि द्विवारा घत उन्नतां शान्तां ज्ञावाथमयोज्यवरेः पलाशा अर्द्धः आते रिष्टपुरे भवति
 ॥ ४० व्याख्या इष्टपुरे द्वात्रा २४ ० भवति कयारीत्या मदादितर्दंतलग्नं ऊर्ध्वं गवयदा भवति कोऽर्थः यद्यध्वमं उलंभ
 ममाणमधः समायाति तदा तस्मादित नक्षत्रं परमानतां शान्तां नार्थमु ३२ विधमपुनमुदेवध्वमं उलंभममा



एतथा ऊर्द्धगंगया तितदा पुनरपि परमोन्नतां शान्तां नार्थमुक्तुमुदेव सदा दितर्क्षविष्णुमनद्वयाद्यानुत्ततां
 शान्तां कीकथयद्वा करणो ३४ दृष्टे दशांतां भवन्ति विशेषश्चायं आसीत् शान्तं क्रवातां क्रवम्यानं उकेद्रभूत
 मतिः शुद्धमेवेन उल्लेख्यं अतस्तत्तन् ज्ञानार्थमदो दितर्क्षतारकिक कल्यनया वारद्वये वेधना च केदाभिधमदो
 नमानीतमिति तात्पर्यार्थः ॥ ३४ ॥ ३४ मुने क्रवमं उले ऊर्द्धगं यत्र एमादा दितर्क्ष विधना तु घातुतां शाः ॥ ३५ ॥
 तथैव तस्मिन्नेवाधोगते पुनरपि सदा दितर्क्ष विधना तृतीया उन्नतां शाः ॥ ३५ ॥ ३५ यो योगि ५६ अदी करणो २० अ
 तो ज्ञातं योरिनीपुरे अतो शा २० विद्याता एव सर्वत्र ज्ञेयां अथ दृक्कर्म संस्कृतं न क्षानयनां मध्यमं करे खो परिभा
 स्य भागे न्यत्रेयां शोभि मं उलस्य मुसंस्कृतं तत्र हि राशि भागे स्फुटं भवेत्सायनं कतदृक्षो ॥ ३५ ॥ ३५ न ह्यस्यो
 परिभास्य दश दृते भवेद्यः स्वलुराशि भागः ॥ तदक्ष संवधव शोन न स्य स्यातां केमेणा भ्यदया मूल मे ॥ ३५ ॥ ३५
 ॥ यत्रे मध्यमं करे यां भास्य भागे न क्षानयनां मध्यमं करे खो परिभास्य मुसंस्कृतं तत्र हि राशि भागे स्फुटं भवेत्सायनं कतदृक्षो ॥ ३५ ॥ ३५
 दृक्षं न क्षानयनां मुसंस्कृतं सायनं दृक्कर्म शुद्धं भवति तथैव तस्मिन्नेवाधोगते पुनरपि सदा दितर्क्ष विधना तृतीया उन्नतां शाः ॥ ३५ ॥ ३५

४५
 ४६

२
 श्री.
 ४६
 यत्र राश

पियोगा शिभागे लगति तदक्ष संवधव शोन न स्य न क्षानयनां मध्यमं करे खो परिभास्य मुसंस्कृतं तत्र हि राशि भागे स्फुटं भवेत्सायनं कतदृक्षो ॥ ३५ ॥ ३५
 न क्षानयनां मुसंस्कृतं सायनं दृक्कर्म शुद्धं भवति तथैव तस्मिन्नेवाधोगते पुनरपि सदा दितर्क्ष विधना तृतीया उन्नतां शाः ॥ ३५ ॥ ३५
 कैतिथयो विलम्बाः ॥ ३५ ॥ ३५ मध्यमं करे खो परिभास्य मुसंस्कृतं तत्र हि राशि भागे स्फुटं भवेत्सायनं कतदृक्षो ॥ ३५ ॥ ३५
 लंगतं स्यात्किल काल दृते ॥ ३५ ॥ ३५ मध्यमं करे खो परिभास्य मुसंस्कृतं तत्र हि राशि भागे स्फुटं भवेत्सायनं कतदृक्षो ॥ ३५ ॥ ३५
 गटादशेष भवत्क्राभ्यधिके उवक्रा ॥ ३५ ॥ ३५ मध्यमं करे खो परिभास्य मुसंस्कृतं तत्र हि राशि भागे स्फुटं भवेत्सायनं कतदृक्षो ॥ ३५ ॥ ३५
 तस्मिन्नेवाधोगते पुनरपि सदा दितर्क्ष विधना तृतीया उन्नतां शाः ॥ ३५ ॥ ३५ मध्यमं करे खो परिभास्य मुसंस्कृतं तत्र हि राशि भागे स्फुटं भवेत्सायनं कतदृक्षो ॥ ३५ ॥ ३५
 कं स्यात्किल योग जेवा ॥ ३५ ॥ ३५ मध्यमं करे खो परिभास्य मुसंस्कृतं तत्र हि राशि भागे स्फुटं भवेत्सायनं कतदृक्षो ॥ ३५ ॥ ३५
 ग्रहे भवेदोदयिके र्द्धरात्र भवे व मिश्र ए मुसंस्कृतं तत्र हि राशि भागे स्फुटं भवेत्सायनं कतदृक्षो ॥ ३५ ॥ ३५
 वं द्वां शं व काल दृते निवश्य स्या न द्वयाद्ये मगा स्य विरूपाय गणा ना उक्थ मध्यमं करे खो परिभास्य मुसंस्कृतं तत्र हि राशि भागे स्फुटं भवेत्सायनं कतदृक्षो ॥ ३५ ॥ ३५
 द्वादशादि काम ए कार्या ॥ वं दे रुणे ने म ति को र्थः ॥ ३५ ॥ ३५ मध्यमं करे खो परिभास्य मुसंस्कृतं तत्र हि राशि भागे स्फुटं भवेत्सायनं कतदृक्षो ॥ ३५ ॥ ३५

दंकप्रमिताः सूर्याशकथ्यंते एवं वंदांशानिरक्षुजमुयत्रमृगासंम्यात्रेवंदांशाश्चावंदाशम्योरयंशकाः पात्यं
 तोयदिनपतंति तदा ३६०० योज्यपात्यतो द्वादशाभिर्भज्यंते। तत्र च्छुल्लप्रतिपदादिगततिथयो भवन्ति। अथ न
 दोत्रानयने। एकमध्यरेखां कशशाकविक्रातरेकोऽर्थः। कालद्वेमेमध्यरेखातोयत्रमृगाननावंदाशालच्चाः
 सति तेषु विधेषु चारिशाताविभक्तेषु यत्फलमायतो। तादव्यश्चिन्त्यादिगतनक्षत्राणि भवन्ति। अथ योगानयन
 माह। कालद्वेमेमकरणनायाश्चर्याकवंदाकयोयो नमाधिते विभिर्दत्ते चारिशाद्विभक्ते यद्वेत्तादवयोग
 हं देविषं भादयोगतयोगा भवन्ति। यादयोगे सते सति भवक्राभ्यधिकं भवति षष्ट्याधिकं शतत्रयदधिकं जायते त
 दो भवक्रमवशेषं षष्ट्याधिका त्रिशातिपात्ये तर्थाः। अथ तिथ्यादीना घटिका नयनां गतं विभुञ्जनि जभागहारा
 रेकोऽर्थः। तिथिनक्षत्रयोगादीनामानयनममयेति थ्यादिषु लब्धेषु यद्वेत्तात्कालातेषां गतमाधिसिधीयते। त
 ते निजनिजभागहाराद्विशोधितमागमिति थ्यादीनां क्रमाद्व्युत्पन्नं भवति। तद्वत्तंगम्यवाषष्ट्या दत्तं वंदमुक्त्या
 तरेण भज्यते। एतस्माच्च तथेदिनाद्यं दिनघटीपलात्मकं सर्वमपि भवति। इति तिथिः। अथ नक्षत्राण्ये।

५०
 श्री०
 यंत्रयते

टिका २० पल ३० वा लानामयोगो घटिका ३६ पल ४० प्रमाणो वर्तते। तिथ्यंतरं पला ५३ नक्षत्रांतरं पल ६२ योगांतरं
 पल ५८ प्रमाणमस्ति परप्रयथांतरवान् दोषः। एवं सर्वत्र ज्ञेयं। अथ द्वादशांगुलशंकुतः माघांगुलशंकुः स्यान्नयनं
 शंकुप्रभामुनिहता रविमिर्विभक्ता प्रास्यदत्र सकलं फलमंगुलाद्यं द्विष्टुं वत इवति सप्तमि तस्य शंकुच्छायाफलं स्यु
 रंतरंगणकैर्निबद्धं। ४८ व्याख्या द्वादशांगुलशंकुः को यच्छायाफलं ज्ञातः प्राप्ता मा सप्तमि गुण्यते द्वादशमि १२ विभज्यते
 चतुर्तः प्राप्ता मंगुलादिफलं सप्तमि गुलशंकुच्छाया भवति। उदा० द्वादशांगुलशंकुच्छाया ११४। १० सप्तमि गुणित्वा
 जाता ७८८। १० द्वादशमि १२ भक्त्वा लब्धं मंगुलाद्या सप्तमि गुलशंकुच्छाया ६६। ३६। एवं सर्वत्रापि ज्ञेयं। अथ सप्तमि गुल
 शंकुतो द्वादशांगुलशंकुच्छाया नयनां सप्तमि गुलस्य प्रणिहयं शंकुच्छायां पतंति विभज्यते त्रयोऽंशैः। लब्धं फलं सूर्यमिति स
 शंकुच्छायां गुलाद्या गणकैः प्रदिष्टः। ५० व्याख्या सप्तमि गुलशंकुच्छाया फलं ज्ञातः प्राप्ता मा द्वादशमि १२ विभाह।
 यमसप्तमि भज्यते ततो लब्धं द्वादशांगुलशंकुच्छाया भवति। उदाहरणं सप्तमि गुलच्छाया ६६। ३६। सूर्ये द्वादशमि
 १२ गुण्यते जाता ७८८। १० सप्तमि भज्यते लब्धं द्वादशांगुलशंकुच्छायां गुलाद्या ११४। १० ज्ञायते। सर्वत्रापि नत

शुभेवा अथेष्टो नतां शोभ्यो द्वादशा गुलसप्तगुलशं कुब्जायानयनां इष्टो नतां शान्नवतेर्विशोध्यतं शंश्रा
 कोष्टद्वितया गृहीवा निजं निजं कुम्भवंवर्गं तथा भजदं गुलजा प्रमेयां ५१ व्याख्या इष्टो नतां शान्नवतेर्व
 विशोध्यपातयिवातच्छायां फलज्यां कोष्टक द्वादशा गृहीवा तथा निजं निजं कुम्भवंवर्गं विभजेत् एवं शंश्रा
 द्वयं स्यते इष्टो नतां शान्नो नतां शान्नो शंश्रा कुम्भवंवर्गं गुलाद्या छाया भवति अत्रोदाहरणं यथा इष्टो न
 तां शान्न १२ एतथां द्वादशां गुलशं कोष्टाया कियती भवति ४३ नतां शान्न १२ नवतेर्विशोध्यतां ७७ एतेषां छाया
 पुष्कलिरिवितः फलज्यातः प्राप्ता गुलशान्नः १२ ३३ अनया द्वादशां गुलशं कुम्भवं ॥ १४४ ॥ विभजेत्
 द्वादशां नतां शान्नो द्वादशां कुम्भवं गुलाद्याः ॥ १४५ ॥ २० अथा द्वादशां नतां शान्नः १२ एतेषां सप्तगुल
 शंश्राः कियती छाया भवति ४३ नतां शान्न १२ नवतेर्विशोध्यतां ७७ एतेषां छाया पुष्कलिरिवित फल
 ज्यातः प्राप्ता गुलाद्या ११ २२ अनया सप्तगुलशं कुम्भवं ॥ १४६ ॥ विभजेत् ततो लब्धे द्वादशां नतां शान्न

५२

श्री०

५३

यंत्रराश

शान्नो सप्तगुलशं कोष्टायां गुलाद्याः ॥ २२ ॥ २२ एवमन्यत्रापि समानयां अथ यंत्रेण पर्वतप्राकारदेवालयया
 तारणं प्रभृद्दीनां दूरदर्शना उच्चवृत्तिनामा ॥ २३ ॥ भादिकानामनुविध्यवायं यंत्रेण नक्षत्रवृत्तं उच्चता
 याः ॥ २४ ॥ ज्ञापिपादाग्रभुवं भुजाग्रमथैकयिवावत उन्नतां शान्न १५ ॥ शीवृथकोष्टद्वितया च शकोष्टायां गृही
 वा न्यतरस्य विकं ॥ २५ ॥ निपन्नविकर्षं भूमिप्राय भूजो गभागेन तदेव विद्वप ४ समं कयेद्भूमिप्रायैर्द्वयान्तरे
 सप्तमाह तं वा शूर्याह तं वानिजमानयुक्तं नवावदेही हित उगता ॥ २६ ॥ व्याख्या प्रभादीनामयंत्रेण नक्षत्र
 वविध्य उगतायां ज्ञेये ज्ञानाय मुपादाग्रभूमिभुजाग्रवविक्रियवात उन्नतां शान्न प्रभादीनामुन्नतां शान्न वि
 शीयतावतामुन्नतभागानां कुम्भवं सप्तमध्मदन्त्यतरस्यैकस्य वच्छाया फलज्या कोष्टकेभ्यो गृहीवा तत्र भुज
 द्वादशां निपन्नयवाततो विकर्षं प्रपरितानुन्नतां शान्न शीवाभूयस्य उपरिभुजाग्रमाराधभूमिमुपूर्ववक्त्राद
 यतः दृष्टतश्चक्रममाणं मुदेव प्रभादीनामयंत्रं भुजाछिद्रेण विध्य मुपादाग्रभूमिमं कयेत् विद्वप ४ व्यातं रं ह सुवि
 तं न्यगुलाद्यपरिमाय एकत्र शोपयेत् यदि सप्तगुलस्य शंश्रा कोष्टाया गृहीता भवेत् तदांतरं सप्तमिह न्यते यद्यन्य

५४

स्यतदाद्वादशभिः। एवं स ते निजवपुर्मानं तत्र योज्यं तद्विहितं न स्युः उंगतां वदेतां च स्योदाहरणां ता
 रणादिः शिरमिनक्षत्रवति द्वे लब्धा उन्नतां शाः। द्वादशतदादेव ज्ञेयं धरणीं शुभं पादये विहिते फलं जाकोष्ठकेषु
 दृष्टुं षट्षष्टिभागानां द्वादशां गुलशं कोष्ठायां गुलाद्यालब्धाः। ५२। अत्रैकस्मिन् घट्टुद्वादिष्वेवाजाता कोष्ठाया
 द्वादशयत्र फलं न्याकोष्ठके ईदृशी कोष्ठाया भवति। स कोष्ठको ज्ञेयः। तदुपर्युन्नतां शर्वतां ततो वषट्मं गुलानां मुप
 रिष्ठा उन्नतां शाः। ६२॥ एष उन्नतां येषु भुजायमारोथ पूर्वमुनादयतः पाश्चाद्वा तथा के स्यते यथा भूयो फलं वृष्टु
 न स्यात् शिरो नक्षत्रवधते। पुनः स्विदाये विहिते पूर्वपर विहृत्यो रंतरं प्रगज्जु एतस्मिन् द्वादशभिः १२ दत्तेषु
 वपुर्मानं गजत्रय युक्ते वजाता। ७५ एतदीहितं न स्यात् योश्च वमानमागतौ। एवं सर्वत्र करणीयां अथ यत्रेण भा
 मागदपंचक स्यादयं ज्ञानमाह। सोरं लवंपा कृत्वा तिजे निक्षय विहृतं मृगाया दयकालं वृत्तौ कुर्यात्। मीष्टस्य कालां
 स्वगस्य शकेषु वामं कराननं च। ५६। लवंपा कयोः पूर्व कुमेव घटलं मम द्योयं गगस्य। गृहस्थवक्त्रे विभजे इह
 तांतरं रवगोर्लक्ष विभुयुक्त्या। ५७। मार्गमुते तत्र गमसि रवेरं मुक्त्यंतरेण घमिदव कुर्यात्। लब्धो दिना सुफलं ग्रह

५२
 श्री.
 कुरु
 यत्र राश

मुकालः स वस्या डदया निधनः। पञ्चविंशतिविशेषकां व्याख्या। सोरं लवंपा कृत्वा तिजे उदये रेखायां नि
 क्षयकालं वृत्ते यत्र मृगाय लग्नं भवति तत्र विहृतं कुर्यात्। तदनु तस्माच्चिह्नं दत्तं मीष्टस्य कालां शकेषु वामं
 अथ दक्षिणे विहृतं लवंपा कराननं मृगपयेत्। एवं स ते पाकं कुजे यच्च मंसां लगति। तच्च मत्तस्य ग्रहस्यादौ
 दयं गसायनं भवति। तत्र कालां शं ज्ञानं इदं। शुक्रं गुरुं शार्ङ्गं कुजाः कालां शं च तरो तरो तरो र्न वभिः शुल्गं
 ११ बुधं १३ शक्रं १५ मंगलं १७ एते उदय कालां शं ज्ञेया। अथ गतगस्य दिनघटा पलानयनं। ततो लग्नं ग्रहो रंतरं रवको वक
 मुते गृहस्थे रमुक्ति योगेनांतरं वामं ज्यते। तत लब्धो मीष्टस्य ग्रहस्योदये गण्यमाने दिनादिकालः स्यात्। ल
 ग्ना इने गतकालः स्यात् अधिके एष्य काल इति भावार्थः। इदमथैव द्यते। अथोदाहरणं। संवत् १४३४ अ
 श्विन शुदि १५ गुरु दिने अर्द्ध रात्रि समये सायनौ रविशुक्रौ साधितौ। रवि ६२। २६। गुरु ५६। २७। शुक्रौ
 ५१। १८। २२। गुरु ५६। २७। रव्यं शोभा कृत्वा तिजे परि धृतौ मकराननं च। सत्यस्य त्थधिकं यतेषु १७
 १०४। लग्नं तत्र विहृतं स्यात् कुरुते तेषु क स्यादयवशां मानमहवं मानमहवै अष्टौ कालां शं मृगं पूर्व वि

५३
 क्रातायाकुष्टभागेगणयिवामकराननंनश्रुथातत्रजाताः१६६भागाःएवंततेषांकुंऊजेकचालगुंमायनं
 १५२४।०उपविष्टाएतंश्रुंकेम्यादीमवधकदयारव्यंलममुथातालेमश्रुकेयोरंतरंभागादिकांपवष्ट्यासर्वमितं३००
 वकशातरविश्रुकेमुक्तियोगेन८४मकंततोलेबोदिनादिकालः१३३४।१०यदिलगाइनाग्रहमुदागतकालः
 यदिलगादधिकमुदाष्टकालः।गतं३३४।१०विश्रा४५।५रूपाद्विमाध्यतोततोअश्विनश्रुदि११एकादशी।
 सोमदिनेउदयाकृतघटी१०४०ममयेश्रुकौदयोजातइतिसिद्धाएवमन्यत्रापिअथयंत्रणतोमादिपवकस्य
 मुज्ञानांइष्टेहनीष्टस्यसुगस्यवापुकांलेइहीबोडुमवोभतांशानाधिष्णाननंतपुनिवेत्यविद्याकुंजेपर।
 भीष्टस्वगमुलगां५०।ततोकायिवामकरास्यमंशोभागनिध्यापरमूजदेशोपुनर्मगायेप्रविधायविक्रंवि
 क्रुद्धयंस्यांतरजानुद्विभागान्॥६०कालोशक्तिरिष्टस्वगस्यहीनान्नत्रायथेष्टंविभजेतुरावत्परवेःस्वगश्चेद
 धिकमुदिष्टकालोभवेद्धीनतरगतोस्मिन्।हीनस्याइष्टदिनेइष्टग्रहस्यामुलगंविद्याज्जानीयात्।त
 तोमकराननमंकयिबीशोःपूर्यस्यभागमशांअपरऊजेनिवेत्यपुनर्मगाननेविक्रंलत्राविक्रुद्धयस्य४वीप

५३
 श्री.
 ५४
 यंत्रराटी

५२
 रविक्रयोरंतरगेडवात्भागानंशानिष्टग्रहस्यकालांशकैहीनान्नत्रवाअथशेषपुरावद्विभजेतरवेश्चेदधिकोय
 होभवति।तदाष्टकालः।अथवेद्धीनोभवति।तदागतकालः।अथोदाहरणं।संवत्१४३४अश्विनवदि३उरु।
 दिनेअर्द्धरात्रिममयेस्फुरियोरविश्रुकौयंत्रणसाधितो।रविमायनः।५०।५।५४।मुक्तिपण४०।श्रुकेपा२६४३।
 मुक्तिरुणदूपा२०।३५।तकीलश्रुकोमममयेश्रवणनदोन्नताशाः।प्रायाः।६०।तत्रनक्षत्राननेसमानांतेअपर।
 ऊजेश्रुकस्यमुलगंसायनेपा२०।०।लमंवर्ततेमकरानन३।३५।उपरिलमंतत्रविक्रंलत्रवारयंशमपरऊजेनिध
 यमकरास्य३५५उपरिलमेसतिविक्रुद्धयांतरात्२श्रुकस्यकालांशोपात्यतोबडवान्नपतति।तद्वशाच्चेवमे
 वांतरा।मवर्षवकवाडुक्तियोगेन८६।१५।मज्यतेलेबोदिनादिकालः।१।२४।४२।यदरवेरधिकोग्रहमुदिष्ट
 कालः।हीनतदागतःकालः।अथैष्टकाला१।२४।४२।एष्टवानिश्चापा४५।२५।मध्येयोज्यते।।जातंएतावताअ
 श्विनश्रुद्वितीयाशनिदिनेगतघटी१०५।ल०ममयेश्रुकस्यमुपश्विमायांभविष्यतिपरःशताःमंउकवीश्वराणां।
 मीर्थोपपत्येगणितप्रबंधा।अस्माकामतकिलकेवलायपरोपकारायविधानमत्रा६२।यथेस्मिन्यंत्रराजस्यगंभी

५२
 श्री.
 ५२
 यंत्रराटी

रोजोनिधाविव/उद्युपनिम/ति कुग्राहचरिमा/डिमा/१४/गुरुपदेशप्रबलमानपान्त्रमिवाश्रिताः॥सकृदपस्त
 इत्येववितत्यगलितपद॥५५॥समाप्तोयैवत्रराजगण॥हाक्राव॥अन्तरचक्रपुरे करेगणकचक्रचक्रवृत्तिः॥

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५
४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५
७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	९०

